डॉ॰ नारायण दत्त श्रीमाली की पुस्तकें —

- सुबोध हस्तरेखा
- सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष
- सुबोध स्वप्न ज्योतिष
- सुबोध मुहूर्त ज्योतिष
- सुबोध अंक विद्या

सुबोध पब्लिकेशन्स

सूबोध

मुहूर्त ज्योतिष

डॉ॰नारायणदत्त श्रीमाली

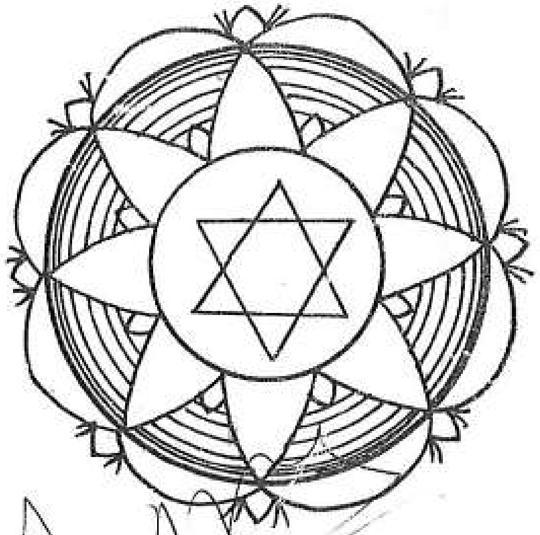

© सुबोध पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली-2

प्रकाशक : सुबोध पब्लिकेशन्स, २/३ बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२
संस्करण : १९९६ मुद्रक : जयमाया आफसेट, शाहदरा, दिल्ली-३२
SUBODH MUHURTA JYOTISH
by Dr. Narain Dutt Shrimali

विषय-सूची

१. विषय प्रवेश ११
२. कालभेद ११
३. मुहूर्त ११
४. मुहूर्त क्या है ? १२
५. दिवस-मुहूर्त १२
६. मुहूर्त नक्षत्र, स्वामी १२
७. रात्रि-मुहूर्त १३
८. अभिजिन्मुहूर्त १३
९. प्रदोष १४
१०. क्षणतिथि १४
११. संवत्सर १४
१२. संवत्सर स्वामी १५
१३. संवत्सर-फल १६
१४. ऋतु १६
१५. अयन १७
१६. मास १७
१७. क्षयमास-अधिक मास १८
१८. मलमास १९
१९. मलमास में वर्ज्य कार्य १९
२०. पक्ष १९
२१. तिथि २०
२२. तिथिसंज्ञक २०
२३. तिथिभेद २१
२४. रंध्रतिथियाँ २१
२५. वर्ज्य तिथियाँ २२
२६. शुभ तिथियाँ २२
२७. शून्य तिथियाँ २२
२८. युगादि तिथियाँ २३
२९. क्षय वृद्धि तिथियाँ २३
३०. तिथि-स्वामी २३
३१. तिथियों में करने योग्य कार्य २४
३२. विष तिथि घटी २५
३३. विषघटी-दोष परिहार २६
३४. वार २७
३५. वाराधिपति २७
३६. वार दोष २७
३७. वार दोष परिहास २७
३८. वारों के अनुसार किये जानेवाले कार्य २८
३९. वार विषघटी २८
४०. वार विभाजन २९
४१. यामार्द्ध २९
४२. कालवेला-काल रात्रि २९
४३. कुलिकादि योग ३०
४४. नक्षत्र-स्वरूप, तारा-संख्या, स्वामी ग्रहाधिपति ३१
४५. नक्षत्र-संज्ञा ३२
४६. नक्षत्र विषघटी ३३
४७. मास शून्य नक्षत्र ३४

धर्मशिक्षक आदित्य नाथ पाण्डेय, ग्राम-चन्दापुर, पोष्ट-भवानीपुर,
तहसील व थाना -चुनार, जिला-मिर्जापुर (उ०प्र०), पिन-२३१३०४.

४८. पंचक नक्षत्र ३४
४९. पुष्य नक्षत्र ३५
५०. जन्म नक्षत्र ३५
५१. योग ३६
५२. नैसर्गिक योग ३६
५३. व्यतिपात ३७
५४. वैधृति ३७
५५. विशेष योग विवेचन ३७
५६. त्याज्य योग ३८
५७. करण ३९
५८. भद्रा ३९
५९. भद्रावास ३९
६०. भद्रादिशा ३९
६१. भद्रा अंग ४०
६२. भद्रा संज्ञा ४०
६३. जन्म राशि कब प्रयोग हो ४०
६४. नामराशि, कब प्रयोग हो ४०
६५. संक्रान्ति ४०
६६. संक्रान्ति-पुण्यकाल ४०
६७. चन्द्रमा ४१
६८. चन्द्रगोचर फल ४१
६९. शुभ चन्द्र ४२
७०. जन्म चन्द्र ४२
७१. स्त्री चन्द्र बल ४२
७२. चन्द्र दिशा ४२
७३. चन्द्रवाहन ४३
७४. त्रैलोक्य में चन्द्रवास ४३
७५. घातचन्द्र ४३
७६. गुरु शुक्रास्त में वर्ज्य-काम ४४
७७. सिंहस्थ गुरु ४४
७८. भूरुदन ४४
७९. भू-हास्य ४४
८०. भू-शयन ४५
८१. भू-रजस्वला ४५
८२. देवशयन ४५
८३. अग्निवास ४५
८४. अग्निवास फल ४५
८५. षोडश संस्कार ४५
८६. नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त ४६
८७. रजस्वला स्नान मुहूर्त ४६
८८. सीमन्तोन्नयन मुहूर्त ४७
८९. मास गर्भपति ४७
९०. विष्णु पूजा मुहूर्त ४७
९१. पितृगृह जाने का मुहूर्त ४८
९२. षष्ठी पूजन मुहूर्त ४८
९३. सूतिका स्नान मुहूर्त ४८
९४. नामकरण संस्कार मुहूर्त ४९
९५. जलपूजन मुहूर्त ५०
९६. दुग्धपान मुहूर्त ५०
९७. राहुमुख विचार ५०
९८. योगिनीवास ५१
९९. रुद्रवास ५१
१००. दोलारोहण मुहूर्त ५१
१०१. निष्क्रमण मुहूर्त ५१
१०२. कच्छाबंधन मुहूर्त ५२
१०३. भूम्योपवेशन मुहूर्त ५२
१०४. जीविका ज्ञान ५३
१०५. अन्नप्राशन मुहूर्त ५३
१०६. कर्णवेध मुहूर्त ५३
१०७. कन्या नासिका वेध मुहूर्त ५४
१०८. जन्मदिन मुहूर्त ५४
१०९. चूड़ाकर्म मुहूर्त ५४
११०. अक्षरारम्भ मुहूर्त ५५
१११. विद्यारम्भ मुहूर्त ५६
११२. यज्ञोपवीत मुहूर्त ५६
११३. यज्ञोपवीत काल ५६
११४. नक्षत्र वेध ५८
११५. सप्तशलाका वेधयंत्र ५८
११६ त्रिबल ५८
११७. रोगपंचक ५८
११८. रोग बाण ५९
११९. सूर्य चन्द्र गुरु शुद्ध ५९
१२०. अपवाद ५९
१२१. उपनयन कर्ता ६०
१२२. उपनयन में निषेध ६०
१२३. वेदारम्भ मुहूर्त ६०
१२४. विवाह मुहूर्त ६०
१२५. पत्नी परीक्षा ६१
१२६. निषेध ६१
१२७. विवाह समय ६१
१२८. अष्टकूट ६१
१२९. कर्ण विचार ६२
१३०. वर्णगुण चक्र ६२
१३१. वश्य ६२
१३२. ग्रह मैत्री चक्र ६३
१३३. गण विचार ६३
१३४. राशि दोष ६४
१३५. द्विर्द्वादश ६४
१३६. चतुर्थदशम ६४
१३७. नवम पंचम ६४
१३८. षडष्टक ६४
१३९. सम सप्तक ६५
१४०. नाड़ी ६५
१४१. अपवाद ६५
१४२. गुण विचार ६६
१४३. मंगल विचार ६७
१४४. अपवाद ६७
१४५. विष कन्या ६८
१४६. विष कन्या परिहार ६८
१४७. विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थान ६९
१४८. वाग्दान मुहूर्त ६९
१४९. वर तिलक मुहूर्त ७०
१५०. विवाह दोष ७०
१५१. विवाह योग तथ्य ७०
१५२. गोधूलि-वेला ७१
१५३. वर्जित गोधूलि-वेला ७२
१५४. पुनर्विवाह मुहूर्त ७३
१५५. विवाह मुहूर्त ७३
१५६. वेदिका मुहूर्त ७३
१५७. वधू प्रवेश मुहूर्त ७४
१५८. प्रथम पाक कर्म मुहूर्त ७४

१५९. प्रथम युवति संभोग मुहूर्त ७५
१६०. वस्त्र निर्माण मुहूर्त ७५
१६१. वस्त्र धोने की दुकान का मुहूर्त ७५
१६२. चमड़े का मुहूर्त ७५
१६३. सुगंधित द्रव्य मुहूर्त ७६
१६४. भूषण रत्न मुहूर्त ७६
१६५. नौकरी करने का मुहूर्त ७६
१६६. सवारी लाने का मुहूर्त ७७
१६७. वाहन चक्र ७७
१६८. नौकर रखने का मुहूर्त ७७
१६९. नौकर-मालिक लाभ-हानि ७७
१७०. नौकाचालन मुहूर्त ७८
१७१. शस्त्र निर्माण मुहूर्त ७८
१७२. शत्रु ताड़न मुहूर्त ७८
१७३. मादक वस्तु मुहूर्त ७९
१७४. वाद्य प्रयोग मुहूर्त ७९
१७५. शत्रु संधि मुहूर्त ७९
१७६. पशु क्रय-विक्रय मुहूर्त ७९
१७७. पक्षी पालन मुहूर्त ७९
१७८. मंत्र साधन मुहूर्त ८०
१७९. नृप प्रयाण मुहूर्त ८०
१८०. नगर प्रवेश मुहूर्त ८०
१८१. मल्ल क्रिया मुहूर्त ८०
१८२. ब्याज लेन-देन मुहूर्त ८१
१८३. भूमि के क्रय-विक्रय का मुहूर्त ८१
१८४. वाणिज्य कर्म प्रारम्भ करने का मुहूर्त ८१
१८५. होटल खोलने का मुहूर्त ८१
१८६. हल चलाने का मुहूर्त ८२
१८७. बीज बोने का मुहूर्त ८२
१८८. सिंचाई मुहूर्त ८२
१८९. खलिहान का मुहूर्त ८२
१९०. अनाज काटने का मुहूर्त ८३
१९१. चूड़ी धारण मुहूर्त ८३
१९२. चूड़ी चक्र ८३
१९३. बंटवारा करने का मुहूर्त ८४
१९४. व्रतोद्यापन मुहूर्त ८४
१९५. यज्ञ अनुष्ठानादि मुहूर्त ८४
१९६. यंत्र मंत्र प्रयोग मुहूर्त ८४
१९७. ऑपरेशन मुहूर्त ८५
१९८. रोगमुक्त स्नान मुहूर्त ८५
१९९. दीक्षा मुहूर्त ८५
२००. गोद लेने का मुहूर्त ८६
२०१. संन्यास धारण करने मुहूर्त ८६
२०२. राज्याभिषेक मुहूर्त ८६
२०३. खड्ग धारण मुहूर्त ८७
२०४. संधि-मुहूर्त ८७
२०५. लघु-उद्योग मुहूर्त ८७
२०६. बृहद् व्यापार मुहूर्त ८८
२०७. बहीखाता प्रारम्भ मुहूर्त ८८
२०८. संपत्ति विभाजन मुहूर्त ८८

२०९. आवेदन-मुहूर्त ८८
२१०. नौकरी प्रारम्भ करने का मुहूर्त ८९
२११. कोल्हू प्रारम्भ करने का मुहूर्त ८९
२१२. नाई की दुकान मुहूर्त ८९
२१३. सुनार की दुकान मुहूर्त ८९
२१४. लुहार की दूकान मुहूर्त ९०
२१५. काष्ठ की दुकान मुहूर्त ९०
२१६. मिठाई की दुकाम मुहूर्त ९०
२१७. चमड़े की दुकान मुहूर्त ९०
२१८. गुप्तचर कार्य मुहूर्त ९०
२१९. तबादले के बाद 'ड्यूटी जॉइन मुहूर्त ९०
२२०. प्रकाशन खोलने का मुहूर्त ९१
२२१. चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त ९१
२२२. संसद में जाने का मुहूर्त ९१
२२३. मंत्रि शपथ मुहूर्त ९१
२२४ बाग लगाने का मुहूर्त ९२
२२५. फिल्म प्रारंभ करने का मुहूर्त ९२
२२६. फिल्म प्रदर्शन मुहूर्त ९२
२२७. भवन निर्माण मुहूर्त ९२
२२८. त्याज्य तिथियाँ ९३
२२९. नींव खोदने की दिशा ९४
२३०. गृहारंभ के विशेष योग ९५
२३१. राहु मुख ९५
२३२. सर्पमुख विचार ९५
२३३. गृह द्वारा विचार ९५
२३४. चौखट चढ़ाने का मुहूर्त ९६
२३५. चूल्हा स्थापन मुहूर्त ९६
२३६. जलाशय खनन मुहूर्त ९६
२३७. निर्वार चक्र ९६
२३८. चन्द्र द्वारा जल प्रमाण ९७
२३९. देव प्रतिष्ठा मुहूर्त ९७
२४०. शिववास ९८
२४१. वास्तुशांति मुहूर्त ९८
२४२. नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त ९९
२४३. वामार्क विचार ९९
२४४. दिशा तिथि विचार ९९
२४५. भद्रा विचार १००
२४६. यात्रा मुहूर्त १००
२४७. मास शूल विचार १००
२४८. घात मास तिथि १००
२४९. योगिनी १०१
२५०. वार दिक्शूल १०१

२५१. वार दोष निवारण १०२
२५२. समय शूल १०२
२५३. काल राहु १०२
२५४. चन्द्रवास १०३
२५५. तिथि-दोष-परिहार १०३
२५६. वारानुसार ग्राह्य शुभ समय १०३
२४७. तारा विचार १०४
२५८. घात नक्षत्र १०४
२५९. लग्न समय १०५
२६०. होमाहुति मुहूर्त १०५
२६१. मूल निवास १०६
२६२. संक्रान्ति नाम १०६
१६३. मूलाश्लेषा जन्म फल १०६
२६४. ग्रह कार्यबल १०७
२६५. रामायण भागवत पुराण कथारंभ मुहूर्त १०७
२६६. मशीनरी चालू करने का मुहूर्त १०७
२६७. लग्न कर्त्तव्य १०८
२६८. सूर्य विचार १०९
२६९. चंद्रविचार १०९
२७०. चंद्रनिर्बल उपचार १११
२७१. भौम विचार १११
२७२, बुद्ध विचार १११
२७३. गुरु विचार ११२
२७४. शुक्र विचार ११२
२७५. शनि विचार ११३
२७६. बृहद् पनौती ११३
२७७. लघु पनौती ११४
२७८. शनि चरण ११४
२७९. शनि वाहन ११४
२८०. शनि-दोष-परिहार ११५
२८१. राहु केतु विचार ११५
२८२. सर्वोपयोगी मुहूर्त ११६
२८३. रोग मुहूर्त ११६
२८४. रोग त्रिनाड़ी ११६
२८५. सर्पकष्ट मुहूर्त ११७
२८६. रोगशांति उपचार ११७
२८७. औषधि सेवन मुहूर्त ११८
२८८. शल्य क्रिया मुहूर्त ११८
२८९. आरोग्य स्नान मुहूर्त ११८
२९०. शांति कार्य मुहूर्त ११९
२९१. अनुष्ठान मुहूर्त ११९
२९२. पूर्णाहुति मुहूर्त ११९
२९३. अखिल धार्मिक कार्य मुहूर्त १२०
२९४. स्वप्न विचार १२०
२९५. शुभस्वप्न १२०
२९८. अशुभ स्वप्न १२१
२९७. अशुभ स्वप्न परिहार १२२
२९८. शकुन १२२
२९९. शुभ शकुन १२२
३००. अपशुकन १२३
३०१. छींक १२४
३०२. दिशानुसार छींक फल १२५
३०३. छींक परिवाद १२५
३०४. स्वर विज्ञान १२५
३०५. वारानुसार स्वर-महत्ता १२६
३०६. जानिये अनिवार्य १२४(क)

मुहूर्त ज्योतिष

जीवन के प्रत्येक क्षण का एक अदृश्य संचालक है, जिसकी व्यवस्था से यह समयचक्र गतिशील रहता है। दिन, रात, रात के बाद फिर ठीक समय पर, निश्चित स्थान पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त, ठीक समय पर ऋतुओं का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित व्यवस्था एवं निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं, वह एक अदृश्य विराट् सत्ता की विशेष देन है।

यह परिवर्तन काल के अन्तर्गत ही होता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा भी है—"काल: कलयता महम्", "कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः।" यह काल भी सूर्य के वशवर्ती होकर चलता है, "चक्रवत परिवर्तेन काल: सूर्यवशात् सदा।" अर्थात् भचक्र में भ्रमण करता हुआ सूर्य जब एक चक्र पूरा कर देता है, तो हमने उसे वर्ष की संज्ञा दी है।

इस भचक्र की बारह राशियों के आधार पर बारह मास, एक-एक अंश के समान एक मास में तीस दिन, एक-एक दिन में साठ घड़ी, एक घड़ी में साठ पल, एक पल में साठ विपल, एक विपल में साठ प्रतिपल, इस प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल-गणना बढ़ती चली जाती है।

महर्षियों ने काल के मुख्यतः पाँच अंग माने हैं—१-वर्ष, २-मास, ३-दिन, ४ लग्न और ५-मुहूर्त। ये परस्पर उत्तम बली हैं, अर्थात् दोषयुक्त वर्ष को श्रेष्ठ मास ठीक कर देता है, यदि मास दोषयुक्त हो पर दिन बलवान् और श्रेष्ठ हो तो मास का दोष नहीं लगता। इसी प्रकार शुद्ध मुहूर्त होने पर वर्ष मास, दिन या अशुभ लग्न का दोष नहीं लगता।[1] इसीलिए महर्षियों ने समस्त कार्यों में मुहूर्त-

१. वर्ष मासो दिनं लग्नं मुहूर्तश्चेति पञ्चकम्।
कालस्यांगानि मुख्यानि प्रबलान्युत्तरोत्तरम्॥
लग्नं दिनभवं हन्ति मुहूर्तः सर्वदूषणम्।
तस्मात् शुद्धि मुहूर्तस्य सर्वकार्येषु शस्यते॥

शुद्धि देखने की आज्ञा दी है।

मुहूर्त क्या है ?

दिन और रात्रि में कुल तीस मुहूर्त होते हैं, इनमें पन्द्रह मुहूर्त दिन में तथा पन्द्रह मुहूर्त रात्रि में होते हैं, अतएव दिन-मान को बराबर पन्द्रह भागों में बाँटने से ऐक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

उदाहरणार्थ दिनमान ३०।१५ है, इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो एक इकाई २।१ आई, अर्थात् एक मुहूर्त की अवधि उस दिन २ घटी १ पल है। यह तो स्पष्ट ही है कि एक घटी बराबर चौबीस मिनटों की होती है, तथा एक पल का तात्पर्य चौबीस सैकण्ड होता है। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण-मुहूर्त की अवधि ४८ मिनट २४ सैकण्ड स्पष्ट हुई।

इसी प्रकार रात्रिमान को भी पन्द्रह भागों में बाँटने से रात्रि के एक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

दिवस-मुहूर्त

नीचे दिन के पन्द्रह मुहूर्त, उनके स्वामी तथा मुहूर्त-स्वामियों के नक्षत्र दिये जा रहे हैं। जिस कार्य के लिए जो नक्षत्र स्पष्ट है, उसी नक्षत्र के मुहूर्त में कार्यारम्भ अनुकूल रहता है--

मुहूर्त संख्या	मुहूर्त स्वामी	नक्षत्र
१	गिरीश	आर्द्रा
२	भुजग	श्लेषा
३	मित्र	अनुराधा
४	पितृ	मघा
५	वसु	धनिष्ठा ?
६	अम्बु	पूर्वाषाढ़ा
७	विश्वदेव	उत्तराषाढ़ा
८	अभिजित्	अभिजित्
९	विधाता	रोहिणी
१०	इन्द्र	ज्येष्ठा
११	इन्द्रानल	विशाखा
१२	निकृति	मूल
१३	वरुण	शतभिषा
१४	अर्यमा	उत्तराफाल्गुनी
१५	भग	पूर्वाफाल्गुनी

इसी प्रकार रात्रि-मुहूर्त, स्वामी व संबंधित नक्षत्र स्पष्ट किया जा रहा है—

रात्रि-मुहूर्त

१	शिव	आर्द्रा
२	अजेकपाद	पूर्वाभाद्रपद
३	अहिर्बुध्न्य	उत्तराभाद्रपद
४	पूषा	रेवती
५	अश्विनी	अश्विनी
६	यम	भरणी
७	अग्नि	कृत्तिका
८	धातृ	रोहिणी
९	शशभृद्	मृग
१०	अदिति	पुनर्वसु
११	जीव	पुष्य
१२	विष्णु	श्रवण
१३	सूर्य	हस्त
१४	विश्वकर्मा	चित्रा
१५	पवन	स्वाती

अभिजिन्मुहूर्त

कुछ विद्वान् इसे "विजय मुहूर्त" कहते हैं, जो कि दिन का आठवाँ मुहूर्त होता है।

सूर्य जब ठीक सिर पर हो, अर्थात् मध्याह्न के पौने बारह बजे से साढ़े बारह बजे तक के समय को "अभिजिन्मुहूर्त" या "विजय मुहूर्त" कहा जाता है। 'नारद पुराण' ने इस मुहूर्त का समय दोपहर ११-३६ से १२-२५ तक माना है। विद्वानों ने सूर्योदय से बाद के चतुर्थ लग्न को 'अभिजित् लग्न' या "विजय लग्न" माना है।

अभिजिन्मुहूर्त में किये गए कार्य हमेशा सफल होते हैं,

चाहे और कितने ही दोष क्यों न हों। अभिजिन्मुहूर्त समय या 'अभिजित् लग्न' उन समस्त दोषों का नाश कर देता है।[1]

प्रदोष

चतुर्थी के प्रथम तीन घंटे, सप्तमी के प्रथम साढ़े चार घंटे तथा त्रयोदशी के अंतिम छः घंटे (या दोपहर) का समय प्रदोष कहलाता है।

यह समस्त शुभ कार्यों में वर्जित है।[2]

कुछ विद्वानों के अनुसार सदैव सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त (अर्थात् ३ घंटे २४ मिनट) प्रदोष-समय कहलाता है—

त्रि मुहूर्तः प्रदोषः स्याद् रवावस्तं गते सति ॥

—स्कंद पुराण

क्षणतिथि

तिथिमान के पन्द्रहवें भाग का क्षणतिथि कहा जाता है। उदाहरणार्थ तिथिमान ६० है, तो पन्द्रह का भाग देने से क्षण-तिथिमान चार घटी होगा।

जो तिथि होगी, प्रथम क्षणतिथि भी वही होगी। उदाहरणार्थ अष्टमी को सूर्योदय के बाद प्रथम चार घटी=(१घंटा ३६ मिनट तक) तक अष्टमी क्षणतिथि होगी, फिर नवमी-दशमी आदि।

जिस कार्य के लिए जो तिथि ग्राह्य हो, वह कार्य किसी भी तिथि के 'क्षणतिथि' में भी किया जा सकता है, और जो कार्य वर्जित है, वह 'क्षणतिथि' में भी वर्जित समझना चाहिए।

संवत्सर

कुल संवत्सर साठ हैं, जिनका क्रमशः नाम इस प्रकार हैं—

१. दिन मध्यगते सूर्ये मुहूर्ते ह्यभिजित्प्रभुः ।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति ॥

—ज्योतिष सार संग्रह

२. चतुर्थी प्रथमे यामे सार्द्धयामे च सप्तमी ।
यामद्वये त्रयोदश्यां प्रदोषः सर्वघायकः ॥

—पीयूषधारा

१	प्रभव	२१	सर्वजित्	४१	प्लवग
२	विभव	२२	सर्वधारी	४२	कीलक
३	शुक्ल	२३	विरोधी	४३	सौम्य
४	प्रमोद	२४	विकृति	४४	साधारण
५	प्रजापति	२५	खर	४५	विरोधकृत्
६	अंगिरा	२६	नन्दन	४६	परिधावी
७	श्रीमुख	२७	विजय	४७	प्रमादी
८	भाव	२८	जय	४८	आनन्द
९	युवा	२९	मन्मथ	४९	राक्षस
१०	धाता	३०	दुर्मुख	५०	नल
११	ईश्वर	३१	हेमलम्ब	५१	पिंगल
१२	बहुधान्य	३२	विलम्ब	५२	कालयुक्त
१३	प्रमाथी	३३	विकारी	५३	सिद्धार्थी
१४	विक्रम	३४	शार्वरी	५४	रौद्र
१५	वृष	३५	प्लव	५५	दुर्मति
१६	चित्रभानु	३६	शुभकृत्	५६	दुन्दुभि
१७	सुभानु	३७	शोभन	५७	रुधिरोद्गारी
१८	तारण	३८	क्रोधी	५८	रक्ताक्षी
१९	पार्थिव	३९	विश्ववसु	५९	क्रोधन
२०	व्यय	४०	पराभव	६०	क्षय

वर्तमान संवत् में १० जोड़कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे, उसी के तुल्य संवत् का नाम या संवत्सर जानना चाहिए—

उदाहरणार्थ संवत् २०२९+१०=२०३९=२०३९÷६०; भागफल ३३, शेष ५९, अतः ५९ के संवत्सर यानी २०२९ का नाम क्रोधन या इस वर्ष 'क्रोधन संवत्सर' होगा।

संवत्सर-स्वामी

संवत्सर में ५ का भाग दो, लब्धि में १ जोड़ने से उसके तुल्य संवत्सर-स्वामी समझना चाहिए।

स्वामीक्रम इस प्रकार है—

१	विष्णु	७	पितर
२	बृहस्पति	८	विश्वदेवा
३	इन्द्र	९	चन्द्र
४	अग्नि	१०	इन्द्राग्नि
५	विश्वकर्मा	११	अश्विनी
६	अहिर्बुध्न्य	१२	भग

उदाहरणार्थ संवत् २०२९ 'क्रोधन संवत्सर' था, जिसका क्रम ५९ है। ५९ में ५ का भाग दिया, लब्धि ११ हुई, ११ में १ जोड़ा तो १२ हुए, अतः बारहवाँ स्वामी इन्द्र अर्थात संवत् २०२९ या क्रोधन संवत्सर के स्वामी "भग" सिद्ध हुए।

संवत्सर-फल

वर्तमान संवत्सर-संख्या को दो से गुणा करो, गुणनफल में से तीन घटाकर ७ का भाग दें, शेष तुल्य संवत्सर-फल समझना चाहिए—

०	पीड़ा	१	दुर्भिक्ष
२	सुभिक्ष	३	मध्यम
४	दुर्भिक्ष	५	सुभिक्ष

६ मध्यम

पूर्व उदाहरण सवत् २०२९ का क्रोधन संवत्सर-क्रम ५९ था। ५९×२=११८—३=११५÷७=भागफल १६ एवं शेष ३, अतः यह संवत्सर मध्यम ही रहेगा।

ऋतु

मेषादि प्रत्येक दो राशियों पर सूर्य का संक्रमणकाल "ऋतु" कहलाता है। इस प्रकार एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती है—१. वसन्त २ ग्रीष्म ३. वर्षा ४. शरद् ५. हेमन्त और ६. शिशिर। इनमें प्रथम तीन ऋतुएँ "दैवी ऋतुएं" कहलाती हैं और अन्तिम तीन ऋतुएं "पितर ऋतुएं" कहलाती हैं।[1]

१. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा। ते देवाऽऋतवः शरद्धेमन्तः शिशिरस्ते पितरः। —शतपथ ब्राह्मण

ऋतुएं	सौरमास	चान्द्रमास
वसन्त	मीन, मेष	चैत्र, वैशाख
ग्रीष्म	वृष, मिथुन	ज्येष्ठ, आषाढ़
वर्षा	कर्क, सिंह	श्रावण, भाद्रपद
शरद्	कन्या, तुला	आश्विन, कार्तिक
हेमन्त	वृश्चिक, धनु	मार्गशीर्ष, पौष
शिशिर	मकर, कुम्भ	माघ, फाल्गुन[1]

अयन

अयन दो हैं—उत्तरायन एवं दक्षिणायन।

१. उत्तरायन (Summer Solstice) इसे सौम्यायन भी कहते हैं, तथा यह देवताओं का दिन माना जाता है। इस अयन में नूतन गृहप्रवेश, उद्यान, देवकार्य, प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत आदि कार्य करने शुभ माने गये हैं।

२. दक्षिणायन (Winter Solstice)—यह समय देवताओं की रात्रि मानी जाती है। इस अयन में षोडष संस्कार एवं मांगलिक कार्य वर्जित हैं, पर देवों, मातृ, भैरव, देवी आदि का पूजन करने से दोष शान्त हो जाता है।

मास

चार प्रकार के मास विद्वानों के मतभेदानुसार हैं—

१. सौर मास

एक राशि पर सूर्य जितने काल तक ठहरता है, वह सौर मास कहलाता है। सामान्यतः यह सौर मास ३० दिन ९ घंटे ५७ मिनट का होता है। विवाह, उपनयन, षोडश संस्कारादि का विचार सौर मास के अनुसार ही किया जाता है।

चान्द्र मास

शुक्ला प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय चान्द्र मास कहलाता है, इसकी अवधि २९ दिन २२ घंटे के लगभग

१. वसन्तश्चैत्रवैशाखौ ज्येष्ठाषाढ़ौ च ग्रीष्मकौ।
वर्षा श्रावणभाद्राभ्यां शरदाश्विन कार्तिकौ।
मार्गपौषौ च हेमन्तः शिशिरो माघफाल्गुनौ। —गौरक्ष संहिता

होती है।

यज्ञादि, श्राद्ध, व्रतोपवास आदि का आधार चान्द्र मास ही होता है।

३. सावन मास

एक दिन-रात में २४ घंटे मानकर ३० दिन-रातों की अवधि को सावन मास कहा जाता है। सम्पत्ति-विभाजन, लेन-देन, ब्याज, प्रायश्चित्त आदि कार्य में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

४. नाक्षत्र मास

अश्विनी नक्षत्र से रेवती नक्षत्र के अन्त तक के सूर्य-भ्रमण की अवधि को नाक्षत्रमास कहा जाता है। नक्षत्रशांति, जलपूजन आदि कार्यों में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

क्षय मास, अधिक मास

सौर वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घटी ३१ पल ३० विपल तथा चन्द्र वर्षमान ३५४ दिन २२ घटी १ पल २३ विपल है, एतदर्थ इन दोनों में अन्तर १० दिन ५३ घटी ३० पल ७ विपल का प्रतिवर्ष रहता है। इन दोनों वर्षों के सामंजस्य हेतु हर तीसरे वर्ष एक अधिक मास तथा १४१ वर्षों बाद तथा फिर १९ वर्षों के बाद क्षय चान्द्र मास की व्यवस्था की है।

जिस चन्द्रमास में स्पष्ट सूर्य-संक्रान्ति न हो वह "अधिक मास" तथा जिस चान्द्रमास में दो सूर्य-संक्रान्तियाँ हों वह "क्षय मास" कहलाता है।

अधिकमास और क्षयमास को "मलमास" की संज्ञा भी दी गई है।

क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष मास में ही होता है, तथा उसी वर्ष अधिक मास भी होता है जोकि फाल्गुन से कार्तिक के बीच होता है—[1]

१. क्षयः कार्तिकादि त्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमास द्वयं च

—भास्कराचार्य

मलमास में कार्य

सन्ध्या, पूजन, नित्यकर्म, रोगशान्ति, गर्भाधान, पुंसवन, श्राद्ध, सपिण्डीकरण, दैनिक दान, सत्कार, स्नान एवं राज्य-कार्य शास्त्रसम्मत है।

मलमास में वर्ज्य कार्य

वार्षिक श्राद्ध, कन्यादान, अग्न्याधान, यज्ञ, तीर्थयात्रा, जलाशय, कूप-निर्माण, प्रतिष्ठा, नामकरण, उपनयन, राज्याभिषेक, व्रतारंभ, व्रतोद्यापन, गृहारंभ, गृहप्रवेश, विवाह, वधू-प्रवेश, दुर्गस्थापन-उत्थापन आदि कार्य मलमास में वर्ज्य है।

जन्म मास

जन्मदिन से आगे के तीस दिनों तक की अवधि को जन्म-मास कहा जाता है। कुछ विद्वान जिस चैत्रादि मास में जन्म हो, उस मास की पूर्णिमा तक की तिथि-अवधि को 'जन्म मास' संज्ञा देते हैं।

जन्म-मास में चूड़ाकरण, यात्रा, कर्णवेध आदि वर्जित हैं पर जप, दान विवाह एवं शुभ कार्यों के लिए शुभद माना है।[1]

जन्म मास के अन्तर्गत मतान्तर से मांगलिक कार्य सम्पादन के लिए वसिष्ठ ने केवल जन्मदिन, गर्ग ने जन्मदिन से आगे आठ दिन तक, अत्रि ऋषि ने दस दिन तक तथा भृगु ने जन्मपक्ष को ही वर्जित एवं शुभ कार्यों के लिए दूषित माना है।[2]

पक्ष

प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं। पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक कृष्ण पक्ष एवं अमावस्योत्तर प्रतिपदा से

१. (क) स्नानं दानं तपो होमः सर्वमांगल्य वर्द्धनम्।
उद्वाहश्च कुमारीणां जन्म मासे प्रशस्यते॥
—श्रीपती समुच्चय

(ख) जन्मनि मासि विवाहः शुभदो। —पीयूषधारा

२. जातं दिनं दूषयते वसिष्ठो, ह्यष्टौ च गर्गो नियतं दशात्रिः।
जातस्य पक्षं विकलं भागुरिश्च शेषाः प्रशस्ताः खलु जन्ममासः।
—राजमार्तण्ड

पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष कहलाता है।

शुक्ल पक्ष में समस्त देव-कार्य एवं कृष्ण पक्ष में पितर-कार्य करना ऋषयादेश है।

एक पक्ष पन्द्रह तिथियों का होता है, पर तिथि में क्षय वृद्धि से सोलह, चौदह या तेरह दिन का भी पक्ष हो जाता है। जिस पक्ष में दो क्षय तिथियाँ हों, वह पक्ष समस्त शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य है।[1]

तिथि

अमावस्या को सूर्य चन्द्रमा का संगम होने के बाद जब चन्द्रमा सूर्य से १२° दूर चला जाता है, तब तक प्रतिपदा रहती है। इसी प्रकार चन्द्र बढ़ते-बढ़ते जब १८०° तक पहुँच जाता है, तब पूर्णिमा होती है। फिर चन्द्रमा सूर्य के निकट जाने लगता है, एवं उसकी कलाएँ क्षीण होने लगती हैं, अन्ततोगत्वा अमावस्या तक पहुँचते-पहुँचते वह पूर्णतः सूर्य की राशियों में विलीन हो जाता है।

अमावस्या के तीन भेद हैं—

१. सिनीवाली—जो प्रातः से रात्रि पर्यन्त रहे।

२. दर्श—चतुर्दशी जो विद्ध हो।

३. कुहू—प्रतिपदा से विद्ध।

पूर्णिमा के भी दो भेद हैं—

१. अनुमति—चतुर्दशी से युक्त हो।

२. राका—प्रतिपदा से संबंधित हो।

तिथि संज्ञक

इसमें दोनों पक्ष शामिल हैं—

१. नंदा— १, ६, ११

नंदा तिथियों में नवीन वस्त्र पहनना, कृषिकार्य, उत्सव, घरेलू कार्य तथा नवीन शिल्पारंभ शुभ माना गया है।

१. पक्षस्य मध्य द्वितिथि पतेतां तदा भवेद्रौरव कालयोगः।
पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टमित्याहुराचार्यवराः समस्ताः॥
—ज्योतिस्कन्ध

२. भद्रा—२, ७, १२

भद्रा तिथियों में विवाह, उपनयन, आभूषण-कला, वाहन, यात्रादि शुभ है।

३. जया—३, ८, १३

जया तिथियों में सैन्य संचालन, सैन्य संगठन, उत्सव-यात्रा, गृहारंभ आदि शुभ माने गए हैं।

४. रिक्ता—४, ९, १४

रिक्ता तिथियों में क्रोध, शत्रुमर्दन, जहर देना, द्यूतकार्य, धोखा, आॅपरेशन आदि शुभ माने गए हैं।

५. पूर्णा—५, १०, १५

विवाह, यज्ञोपवीत, नृप-अभिषेक, उत्सव, आदिकार्य यज्ञादि पूर्णा तिथियों में शुभ माने गए हैं।

तिथि-भेद

उदयव्यापिनी

जो तिथि सूर्योदय के समय व्याप्त हो उसे उदयव्यापिनी तिथि कहते हैं। ऐसी तिथि उत्सव, विवाह, यज्ञ, प्रतिष्ठादि कार्यों में शुभ मानी गई है।

कर्मव्यापिनी

प्रथम पहर के बाद किसी समय समाप्त हो जानेवाली तिथि कर्मव्यापिनी संज्ञक होती है। श्राद्ध, मैथुन, जन्म-मरण आदि में इसी तिथि का उपयोग करना चाहिए।

रंध्र तिथियाँ

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य के लिए रंध्र तिथियाँ वर्जित हैं। ये तिथियाँ दोनों पक्षों की मानी गई हैं—

तिथि	घटी तक
४	८ घटी तक
६	९ घटी तक
८	१४ घटी तक
९	२५ घटी तक

१२	१० घटी तक
१४	५ घटी तक

वर्ज्य तिथियाँ

कुछ विद्वान् इन्हें 'पर्व तिथियाँ' भी कहते हैं। समस्त शुभ कार्यों में इन तिथियों का प्रयोग निषेध है—

(क) कृष्ण पक्ष की अष्टमी
(ख) कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी
(ग) अमावस्या
(घ) पूर्णिमा
(ङ) सूर्य संक्रान्ति की तिथि

अशुभ तिथियाँ

मांगलिक कार्यों में यथासंभव इन तिथियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए—

(क) चतुर्थी (कृष्णपक्ष)
(ख) सप्तमी, अष्टमी, नवमी (कृष्णपक्ष)
(ग) १३, १४, अमावस्या व शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा

पर देवी-कार्य या नवरात्रि में शुक्ल प्रतिपदा को शुभ माना है।

शून्य तिथियाँ

समस्त शुभ कार्यों में इन शून्य[1] तिथियों का त्याग ही शास्त्रसम्मत है—

मास	पक्ष	तिथियाँ
चैत्र	दोनों पक्ष	८ ९
वैशाख	,,	१२
ज्येष्ठ	शुक्ल पक्ष १३,	कृष्ण पक्ष १४
आषाढ़	शुक्ल पक्ष ६,	कृष्ण पक्ष ७
श्रावण	दोनों पक्ष	२,३
भाद्रपद	,,	१,२
आश्विन	,,	१०,११
कार्तिक	शुक्लपक्ष १४	कृष्ण पक्ष ५
मार्गशीर्ष	दोनों पक्ष	७,८

पौष	दोनों पक्ष	४,५
माघ	शुक्ल पक्ष ५,	कृष्ण पक्ष ६
फाल्गुन	शुक्ल पक्ष ३,	कृष्ण पक्ष ४[1]

युगादि तिथियाँ

सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग व कलियुग जिन तिथियों से प्रारम्भ हुआ है, युग तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्यों में इनका प्रयोग निषेध है—

(क) सत्ययुग	कार्तिक शुक्ला ९
(ख) त्रेतायुग	वैशाख शुक्ला ३
(ग) द्वापरयुग	माघ कृष्णा १५
(घ) कलियुग	श्रावण कृष्णा १३

क्षय-वृद्धि तिथियाँ

जो तिथि क्षय या वृद्धिगत हो, उस दिन किये गये समस्त शुभ कार्य उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं, जिस प्रकार अग्नि में सूखा ईंधन।

तिथि-स्वामी

जिन तिथियों के जो स्वामी हैं, उन स्वामी देवताओं से सम्बन्धित कार्य उन्हीं से सम्बन्धित तिथियों में करने से पूर्ण फल मिलता है—

तिथि	स्वामी
१	अग्नि
२	ब्रह्मा
३	गौरी
४	गणेश
५	सर्प
६	स्कंद
७	सूर्य

१. 'केन्द्रे चैत्र त्रिकोणे च शुभो ह्युपचयेपि वा।
एकोपि बलवांश्चापि शून्यतिथ्युद्भ नाशक ॥
अर्थात्—केन्द्र या त्रिकोण या उपचय स्थान में शुभ एवं बलवान् ग्रह हो तो शून्य तिथि-दोष समाप्त हो जाता है।

८	शिव
९	दुर्गा
१०	यम
११	विश्वदेव
१२	विष्णु
१३	कामदेव
१४	शिव
१५	चन्द्र
३०	पितर

तिथियों में करने योग्य कार्य

१. प्रतिपदा

प्रतिपदा में मात्र कृष्णा प्रतिपदा को यात्रा, उपनयन, विवाह, प्रतिष्ठा या गृहारंभ, प्रवेश, शांतिक कार्य शुभ है।

२. द्वितीया

सेनाप्रयाण, सैन्यसज्जा, युद्ध, प्रतिष्ठा, विवाह, आभूषण।

३. तृतीया

संगीत, वाद्य, कलाकार्य-शिक्षा, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश।

४. चतुर्थी

विद्युत से संबंधित कार्य, बिजली की दुकान का मुहूर्त, वध दूषित कार्य।

५. पञ्चमी

समस्त शुभ कार्य करें, पर ऋण नहीं देना चाहिए। लेन-देन उधारी वर्ज्य।

६. षष्ठी

युद्धकार्य, गृहारंभ, शुभकार्य। पर पितृकर्म, काष्ठ कर्म एवं यात्रा वर्ज्य है।

७. सप्तमी

विवाह, संगीत, यात्रा, गृहप्रवेश, वधू-आमंत्रण, तथा द्वितीया को किये जानेवाले कार्य।

८. अष्टमी

युद्ध, शिल्प, लेखन, मनोरंजन, रत्नपरीक्षा, शस्त्रधारण।

९. नवमी

जुआ, मद्य-निर्माण, आखेट।

१०. दशमी

२, ३, ५, एवं सप्तमी के कार्य।

११. एकादशी

व्रतोपवास, उपनयन, देवकार्य, गेहारंभ, गमन।

१२. द्वादशी

मांगलिक कार्य, पाणिग्रहण, उपनयन आदि, परन्तु नूतन गृहारंभ या प्रवेश और यात्रा वर्ज्य है।

१३. त्रयोदशी

२, ३, ५, ७, १० को किये जानेवाले कार्य।

१४. चतुर्दशी

शस्त्रधारण, युद्धादि कार्य। यात्रा वर्ज्य है।

१५. पूर्णिमा

विवाह, देवकार्य, मंदिर-प्रतिष्ठा, याज्ञिक शांति आदि।

३०. अमावस्या

पितृकर्म, दान। शुभकर्म वर्ज्य।

विषतिथि-घटी

निम्न विषतिथि-घटियों में किसी भी प्रकार का शुभ एवं मांगलिक कार्य पूर्णतः वर्ज्य है, यह समय 'दुष्ट फलदा' कहा जाता है।[1]

तिथि	घटी से	घटी तक
१	१५	१९
२	५	९
३	८	१२
४	७	११

१. विवाह व्रत चूडासु गृहारंभ प्रवेशयो।
यात्रादि शुभ कार्येषु विघ्नदा विषनाडिकः ॥१॥

—ज्योतिःसार

५	७	११
६	५	९
७	४	८
८	८	१२
९	७	११
१०	१०	१४
११	३	७
१२	१३	१७
१३	१४	१८
१४	७	११
१५ एवं ३०	८	१२

ऊपर घटीमान-तिथि को ६० घटी मानकर दिया है। प्रत्येक विष घटी ४ घटी होती है, अतः तिथिमान के न्यूनाधिक होने पर विषघटी में भी उसी के अनुपात से न्यूनाधिक समझना चाहिए—

उदाहरणार्थ यदि प्रतिपदा ६० घटी हो तो विषघटी उस दिन १५ घटी से १९ घटी तक रहेगी, पर यदि प्रतिपदा ६१ घटी हो तो उस दिन विषघटी १६ घटी से २० घटी तक होगी, या यदि प्रतिपदा ५८ घटी रहेगी, तो विषघटी उस दिन १३ घटी से १७ घटी तक रहेगी।

विषघटी-दोष-परिहार

कर्मकाल में लग्नकुण्डली बनाने पर यदि चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में रहे, अथवा लग्नेश स्वगृही शुभमित्र दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोणस्थ हो तो विषघटी दोष नहीं लगता।[1]

१. चन्द्रो विषघटी दोषं हन्ति केन्द्रः त्रिकोणगः।
लग्न विना शुभैर्दृष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा ॥

—दैवज्ञ मनोहर

विषनाड्युदितं दोषं हन्ति सौम्यर्क्षगः शशी।
मित्रदृष्टोऽथवा स्वीय वर्गस्थो लग्नपो भवेत् ॥

—फल प्रदीप

वार

वार का प्रारंभ सूर्योदय से ही समझना चाहिए, परन्तु स्नान-सन्ध्यादि में अर्धरात्रि के उपरान्त संकल्प में अग्रिम वार का ही (सूर्योदय के समय होनेवाले वार का) उल्लेख करना चाहिए।

वारों के अधिपति इस प्रकार हैं—

वाराधिपति

वार		देवता
रविवार		शिव
सोमवार	→	पार्वती
मंगलवार		कार्तिकेय
बुधवार		विष्णु
गुरुवार		ब्रह्मा
शुक्रवार		इन्द्र
शनिवार		काल

विभिन्न देवताओं की पूजा उनके स्वयं के वारों में ही करना शुभ माना गया है।

वार-दोष

रवि, गुरु और शुक्रवार का प्रभाव रात्रि में नगण्य एवं सोम, मंगल, शनिवार का प्रभाव दिन में नगण्य रहता है! बुधवार अपना फल सर्वदा प्रदर्शित करता है।

वार-दोष-परिहार

वारों की अशुभता को शुभता में परिवर्तित करने के लिए निम्न प्रयोग शास्त्रसम्मत हैं—

रविवार		ताम्बूल-भक्षण
सोमवार	→	चन्दन-प्रयोग
मंगलवार		पुष्प-प्रयोग
बुधवार		बुधमंत्र उच्चारण
गुरुवार		शिव-पूजन
शुक्रवार		श्वेत वस्त्रधारण
शनिवार		विप्र-सम्मान

वारों के अनुसार किये जानेवाले कार्य

रविवार

यह ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक है। राज्याभिषेक, ललित कला सीखना, राज्यसेवा, पशुक्रय, औषधि-निर्माण, धातु कार्य, यज्ञादि, मंत्रोपदेश आदि कार्य शुभ माने गये हैं।

चन्द्रवार

चर एवं चलसंज्ञक। आभूषण-निर्माण, वाटिका-संगीत-नृत्य कलारंभ, पशु-क्रय-विक्रय, कृषिकार्य आदि शुभ हैं।

मंगलवार

उग्र एवं क्रूरसंज्ञक। विष देना, अग्निदाह, संधिविच्छेद, छल करना, असत्य बोलना आदि।

बुधवार

मिश्र एवं साधारण संज्ञक। साहित्यारंभ, संगीत कलारंभ, लेखन-कार्य, पाणिग्रहण, धान्य-संग्रहादि।

गुरुवार

लघु एवं क्षिप्र। यज्ञ, हवन, प्रतिष्ठा, देवार्चन, नवग्रह-पूजन, धार्मिक कार्य, विद्यारंभ-नवीन वस्त्रधारण, वाहन घर में लाना, औषधि-संग्रह एवं अलंकार-धारण।

शुक्रवार

नृत्य-वाद्य-गीत-कलारंभ, स्त्रीसंसर्ग, धन-सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र-भूषण धारण, कृषिकार्य।

शनिवार

दारुण एवं तीक्ष्ण संज्ञक। अस्त्र-शस्त्र धारण, नवीन गृह-प्रवेश, विषदान, असत्यभाषण, पशुक्रय-विक्रय, काष्ठकर्म आदि-शुभ माने गये हैं।

वार विषघटी

समस्त शुभ एवं मांगलिक कार्यों में वार विषघटी का त्याग करना चाहिए—

वार	घटी से	घटी तक
रविवार	२०	२४
सोमवार	२	६
मंगलवार	१२	१६
बुधवार	१०	१४
गुरुवार	७	११
शुक्रवार	५	६
शनिवार	२५	२६

वार-विभाजन

दिनमान में ३ का भाग देने से प्रथम भाग पूर्वाह्न, द्वितीय भाग मध्याह्न तथा तृतीय भाग अपराह्न कहलाता है।

पूर्वाह्न में सन्ध्या, देवकार्य, यज्ञादि प्रारम्भ। मध्याह्न में अतिथि-सत्कार, व्यावहारिक कार्य। अपराह्न में पितृकार्य, श्रद्धादि कार्य करने चाहिए।

यामार्द्ध

दिनमान में आठ का भाग देने से अष्टमांश को यामार्द्ध कहा जाता है। यामार्द्ध में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य सर्वथा वर्ज्य है—

वार	यामार्द्ध
रविवार	४,५
सोमवार	२,७
भौमवार	२,६
बुधवार	३,५
बृहस्पतिवार	७,८
शुक्रवार	३,४
शनिवार	१,६,८

उदाहरणार्थ दिनमान ३२।८ है, इसमें ८ का भाग दिया तो एक इकाई ४।१ अर्थात् ४ घटी १ पल हुई। इस प्रकार रविवार को चौथी तथा पाँचवीं इकाई यामार्द्ध कही जायेगी।

कालवेला-कालरात्रि

जिस प्रकार शुभकार्यों में यामार्द्ध त्याज्य है, उसी प्रकार कालवेला एवं कालरात्रि का भी त्याग करना चाहिए—

वार	कालवेला	कालरात्रिवेला
रविवार	५	६

सोमवार	२	४
मंगलवार	६	२
बुधवार	३	७
गुरुवार	७	५
शुक्रवार	४	३
शनिवार	१,८	१,८

कालवेला में यात्रा करने से यात्रा करने वाले की मृत्यु, विवाह करने से शीघ्र वैधव्य तथा यज्ञोपवीत करने से ब्रह्महत्या लगती है।[1]

कुलिक, काल, यमकंटक कष्टक

ये चारों ही दुष्प्रभावक हैं, तथा इनका त्याग आवश्यक है—

वार	कुलिक	काल	यमकंटक	कष्टक
रविवार	१४	८	१०	६
सोमवार	१२	६	८	४
मंगलवार	१०	४	६	२
बुधवार	८	२	४	१४
गुरुवार	६	१४	२	१२
शुक्रवार	४	१२	१४	१०
शनिवार	२	१०	१२	८

पर कुलिक, काल, यमकण्टक एवं कष्टक का दुष्ट प्रभाव रात्रि में नहीं रहता।[2]

नक्षत्र

नक्षत्र सत्ताइस हैं, पर उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण एवं श्रवण नक्षत्र की पहली ४ घटी लेकर 'अभिजित्' नक्षत्र को

१. यात्रायां मरणं काले वैधव्यं पाणिपीडने।
व्रते ब्रह्मवधः प्रोक्तः सर्वकर्मसु तं त्यजेत्॥

—जातक दीपक

२. निधनं प्रहराद्ध तु निःस्वत्वं यमकंटके।
कुलिके सर्वनाशः स्याद् रात्रौवेते न दोषदाः॥

—पीयूषधारा

माना है, यह नक्षत्र लगभग १९ घटी का होता है, तथा अभिजित् नक्षत्र पर चन्द्रमा (राश्यादि ९-६-४०-० से ९-१०-५३-२० तक) इतना ही रहता है।

क्र०सं०	नक्षत्र	स्वरूप	तारासंख्या	स्वामी	ग्रहाधिपत्य
१	अश्विनी	अश्वमुख	३	अश्विनीकुमार	केतु
२	भरणी	योनि	३	यम	शुक्र
३	कृत्तिका	नापितक्षुर	६	अग्नि	सूर्य
४	रोहिणी	शकट	५	ब्रह्मा	चंद्र
५	मृगशिरा	हिरणमुख	३	चन्द्र	मंगल
६	आर्द्रा	मणि	१	शिव	राहु
७	पुनर्वसु	गृह	४	अदिति	गुरु
८	पुष्य	बाण	३	गुरु	शनि
९	आश्लेषा	चक्राकार	५	सर्प	बुध
१०	मघा	भवन	५	पितर	के०
११	पूर्वाफाल्गुनी	खाट	२	भग	शु०
१२	उत्तरा „	शय्या	२	अर्यमा	सू०
१३	हस्त	हाथ	५	रवि	चं०
१४	चित्रा	मोती	१	विश्वदेव	मं०
१५	स्वाती	मूंगा	१	वायु	रा०
१६	विशाखा	तोरण	४	इन्द्राग्नि	बृ०
१७	अनुराधा	बलिर्भुक्तपुंज	४	मित्र	श०
१८	ज्येष्ठा	कुण्डल	३	इन्द्र	बु०
१९	मूल	सिंहपुच्छ	११	राक्षस	के०
२०	पूर्वाषाढ़ा	हाथी दाँत	२	जल	शु०
२१	उत्तराषाढ़ा	सिंहासन	२	विश्वेदेवा	सू०
२२	श्रवण	वामन	३	विष्णु	चं०
२३	धनिष्ठा	मृदंग	४	वसु	मं०
२४	शतभिषा	वृत्त	१००	वरुण	रा०
१५	पूर्वाभाद्रपद	मंच	२	अजपाद	गु०
२६	उत्तरा „	जुड़वें पुरुष	२	अहिर्बुध्न्य	श०
२७	रेवती	मृदंग	३२	पूषा	बु०

नक्षत्र संज्ञा

(१) ध्रुव नक्षत्र—रो०, उ० फा०, उ० षा०, उ० भा० ।
कार्य—प्रत्येक स्थिर कर्म, गृह प्रवेश, बीज बोना, विनायक पूजन, वस्त्र धारण, आभूषण-निर्माण, मित्रता आदि कार्य करने शुभ हैं। इन्हें स्थिर नक्षत्र भी कहा जाता है।

(२) चर या चल नक्षत्र—पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
कार्य—वाहन, सवारी करना, उपवाटिका, पौधा लगाना, दुकान खोलना, रत्न, विद्यारंभ।

(३) उग्र या क्रूर संज्ञक नक्षत्र—भरणी, मघा, पू० फा०, पू० षा०, पू० भा०।
कार्य—अग्नि जलाना, शत्रु-मर्दन, यन्त्र-मन्त्र-तंत्र कार्य, पशु-पालन, विषपान।

(४) मिश्र नक्षत्र—कृत्तिका, विशाखा।
कार्य—अग्नि कार्य, वृषोत्सर्ग, कैद करना, विष, भयंकर कार्य।

(५) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित्।
कार्य—चर नक्षत्र में वर्णित सभी कार्य इसमें किये जा सकते हैं।

(६) मृदु नक्षत्र—मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती।
कार्य—गीत, ललित कार्य, वस्त्र धारण, अलंकार-सज्जा।

(७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल।
कार्य—कलह, मुकदमा, घोड़ों का प्रशिक्षण, बीज बोना, शांति, यज्ञादि कार्य, संगीत शिक्षा, नवीन पोशाक।

(८) ऊर्ध्वमुख नक्षत्र—रो०, आ०, पुष्य, उ० फा०, उ० षा०, श्र०, धनि०, शत०, उ० भा०।
कार्य—गृह प्रारम्भ, विवाहादि मंगल कार्य, राज्याभिषेक, ध्वजारोहण आदि।

(९) अधोमुख नक्षत्र
भ०, कृ०, श्ले०, म०, पूफा०, वि०, मू०, पूषा०, पूभा० ।
कार्य—तालाब-खनन, गड़ा धन निकालना, ज्योतिष अध्ययन प्रारम्भ, शिल्पकला, यात्रा।

(१०) तिर्यं मुख नक्षत्र
अश्विनी, मृग०, पुन०, ह०, चि०, स्वा०, अनु० ज्ये०, रे०।
कार्य—पशु-क्रय-विक्रय, हल चलाना, ललित कार्य, पत्र-व्यवहार, यात्रा।

(११) अन्ध नक्षत्र
रो०, पु०, उफा०, विषा०, पूषा०, ध० रे०।
कार्य—खोई हुई वस्तु पूर्व दिशा में जायगी तथा शीघ्र मिलेगी।

(१२) मध्यलोचन नक्षत्र—
भ०, आ०, म०, चि० ज्ये०, अभि०, पू० भा०।
कार्य—खोई या चोरी वस्तु पश्चिम दिशा की ओर। पता लगने पर भी वस्तु हाथ में न आ सकेगी।

(१३) मन्द लोचन नक्षत्र
अ०, मृग०, श्ले०, ह०, अनु० उषा०, शत०।
कार्य—खोई वस्तु उत्तर दिशा की ओर। कठिनता व विलम्ब से वस्तु प्राप्त होगी।

(१४) सुलोचन नक्षत्र
कृ०, पुन०, पू० फा०, स्वा०, मू०, श्र०, उ० भा०।
कार्य—वस्तु उत्तर दिशा की ओर। पर मिल न सकेगी।

नक्षत्र विषघटी

नक्षत्र विषघटी में किया गया प्रत्येक कार्य सर्वथा निष्फल जाता है—

नक्षत्र	घटी से	घटी तक
अश्विनी	५०	५४
भ०, पू०, षा०, उ० भा०	२४	२८
कृ०, पुन०, म०, रेव०	३०	३४
	३१	

रो०	४०	४४
मृ०, चि०, स्वा०, ज्ये०	१४	१८
आ० हस्त	२१	२५
पुष्य०, पूफा०, चित्रा०, उषा०	२०	२४
आश्ले०,	३२	३६
उ० फा०, शत०	१८	२२
अनु०, श्र०, ध०	१०	१४
मूल	५६	६०
पू० भाद्र०	१६	२०

उपर्युक्त मान नक्षत्र को ६० घटी मानकर किया है। नक्षत्रमान न्यूनाधिक होने पर विषघटी भी उसी अनुपात में न्यूनाधिक होगी।

मास शून्य नक्षत्र

मास	नक्षत्र
चैत्र	अश्विनी, रोहि०
वैशाख	चि०, स्वा०
ज्येष्ठ	पुष्य०, उ० षा०
आषाढ़	पू० फा०, धनि०
श्रावण	उ० षा० श्र०
भाद्रपद	शत०, रे०
आश्विन	पू० भा०
कार्तिक	कृत्तिका, मघा,
मार्गशीर्ष	चित्रा, विशाखा
पौष	आर्द्र, अश्वि० हस्त
माघ	श्रवण, मूल
फाल्गुन	भरणी, ज्येष्ठा

पंचक नक्षत्र

धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पाँच नक्षत्र (समूह) पंचक कहलाते हैं।

पंचक नक्षत्रों में समस्त शुभकार्य, गृहप्रवेश, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतकर्म, वस्त्रधारण, तृण-संचय, लकड़ी काटना, गृहारम्भ आदि त्याज्य हैं।

पुष्य नक्षत्र

किसी भी प्रकार के दोष एवं अशुभ का परिमार्जन पुष्य नक्षत्र से हो जाता है।[१] चाहे चन्द्राक्षीण हो, तारा-बल न भी हो, पुष्य नक्षत्र होने से यह दोष भी नहीं लगता।[२] यहाँ तक कि अष्टम चन्द्रमा का दोष भी पुष्य हर लेता है।[३] मुहूर्त्त दीपिका के अनुसार तो किसी भी प्रकार का दोष व्याप्त ही नहीं होता, यदि मुहूर्त में पुष्य नक्षत्र भी हो। परन्तु विवाह आदि में पुष्य नक्षत्र लेने का पूर्णतः निषेध है।[४]

रविवार को पुष्य—मंत्रसिद्धि, औषधि प्रयोग के लिए शुभ।
गुरुवार को पुष्य—व्यापारिक कार्यों के लिए श्रेष्ठतम।
शुक्रवार को पुष्य—उत्पातकारक, विघ्नकर्ता।
चन्द्र, भौम बुध, शनि को पुष्य—श्रेष्ठ।
नवमी गुरुवार को पुष्य—विषकारक।
ज्येष्ठ मास में पुष्य—व्यर्थ।
मार्गशीर्ष में पुष्य—हानिप्रद।

जन्म नक्षत्र

जन्म के समय जो नक्षत्र हो, वह नक्षत्र अन्नप्राशन, उपनयन,, विवाह, राज्याभिषेक, यात्रा आदि में निषेध है।[५]

१. सिंहो यथा सर्व चतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम।
२. पापैर्विद्धे युते हीने चन्द्र तारा बलेऽपि च।
पुष्ये सिध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च ॥—मुहूर्त गणपति
३. पुष्यः परकृतं हन्ति न तु पुष्यकृतं परः।
दोषं यद्यष्टमोऽपिन्दुः पुष्यः सर्वार्थ साधक ॥
—ज्योतिःप्रकाश
४. समस्त कर्मोचित कालपुष्यो
पुष्यो विवाहे मद मूर्च्छितत्वात ॥
—ज्योतिर्विदाभरण
विवाहमेकं परिहृत्य सिद्धयं सर्वाणि कार्याणि करोतु सिध्यै।
—कालिदास
५. बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलु जन्मधीष्यणम्।
शुभरवनिष्टं सततं विवाह-सीमन्त-यात्रादिषु मंगलेषु ॥

जन्म-नक्षत्र से २५वाँ तथा २७वाँ नक्षत्र भी शुभ कार्यों के लिए पूर्णतः वर्जित है ।

योग

योग दो प्रकार के हैं—नैसर्गिक तथा तात्कालिक । नैसर्गिक योगों का क्रम अपरिवर्तित रहता है, जबकि तात्कालिक योग वार-तिथि-नक्षत्रादि के संयोग से बनते हैं।

नैसर्गिक योग

ये सत्ताईस हैं, तथा इनका क्रम सुनिश्चित है । नीचे योग, उसका स्वामी तथा फल स्पष्ट किया जा रहा है—

क्र० सं०	योग	स्वामी	फल
१	विष्कंभ	यम	अशुभ
२	प्रीति	विष्णु	शुभ
३	आयुष्मान्	चन्द्र	शुभ
४	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ
५	शोभन	गुरु	शुभ
६	अतिगण्ड	चंद्र	अशुभ
७	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ
८	धृति	जल	शुभ
९	शूल	सर्प	अशुभ
१०	गण्ड	अग्नि	अशुभ
११	वृद्धि	सूर्य	शुभ
१२	ध्रुव	भूमि	शुभ
१३	व्याघात	वायु	अशुभ
१४	हर्षण	भग	शुभ
१५	वज्र	वरुण	अशुभ
१६	सिद्धि	गणेश	शुभ
१७	व्यतिपात	रुद्र	अशुभ
१८	वरियान	कुबेर	शुभ
१९	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
२०	शिव	मित्र	शुभ
२१	सिद्ध	कार्तिकेय	शुभ

२२	साध्य	सावित्री	शुभ
२३	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
२४	शुक्ल	पार्वती	शुभ
२५	ब्रह्म	अश्विनीकुमार	शुभ
२६	ऐन्द्र	पितर	अशुभ
२७	वैधृति	दिति	अशुभ

व्यतिपात

उपर्युक्त योगों में व्यतिपात या व्यतिपात अत्यन्त दुर्धर्ष उपद्रवकारी योग है । समस्त मांगलिक कार्यों में सर्वथा निषेधनीय यह योग है ।

वैधृति

यह भी व्यतिपात की तरह ही अशुभ एवं विघ्नकर्ता है ।

अन्य

निम्न योग भी शुभकार्यों में सर्वथा वर्ज्य हैं :

(क) परिघ योग का पूर्वार्द्ध ।
(ख) विष्कंभ की प्रथम तीन घटी ।
(ग) वज्र की प्रथम तीन घटी ।
(घ) व्याघात की प्रथम नौ घटी ।
(ङ) शूल की प्रथम पाँच घटी ।
(च) गंड की प्रथम छः घटी ।
(छ) अतिगंड की प्रथम छः घटी ।

विशेष

(१) यदि किसी दिन वैधृति, व्यतिपात, भद्रा या कोई अशुभ योग हो, पर उसी दिन अमृत योग भी बनता हो तो अशुभ योगों का नाश हो जाता है ।[1]

(२) भद्रा मंगलवार, शनिवार, व्यतिपात, जन्मनक्षत्र आदि दोष मध्याह्न के पश्चात् नहीं लगता ।[2]

---

१. यदि विष्टिर्व्यतीपातो दिनं चाप्यशुभं भवेत् ।
हन्यतेऽमृत योगेन भास्करेण तमो यथा ।। —राजमार्तण्ड

२. विष्टावङ्गारके चैव, व्यतीपाते शनैश्चरे ।
निधने जन्मनक्षत्रे मध्यान्हात्परतः शुभम ।।
—श्रीपति व्यवहार निर्णय

(३) यदि कोई कुयोग हो, पर उसी दिन सुयोग भी हो जाय, तो कुयोग दोष समाप्त हो जाता है ।[1]

(इसके अतिरिक्त आनन्दादि अट्ठाइस योग, क्रकचादि तात्कालिक योग विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं, पाठकों को इसके लिये सुबोध पॉकेट बुक्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक "सुबोध प्रारंभिक ज्योतिष" का अध्ययन करना चाहिए)

त्याज्य योग

(१) एकम को उत्तराषाढ़ा, दूज को अनुराधा, तीज को उ० षा०, पाँचम को मघा, छठ को रोहिणी, सातम को हस्त या मूल, आठम को पू० भा०, नवम को कृत्तिका, ग्यारस को रोहिणी, बारस को आश्लेषा एवं तेरस को स्वाती या चित्रा पूर्णतः वर्ज्य माना गया है ।

(२) पंचमी को हस्त नक्षत्र एवं रविवार
षष्टी को मृगशिरा व सोमवार
सप्तमी को अश्विनी व भौमवार
अष्टमी को अनुराधा व बुधवार
नवमी को पुष्य व गुरुवार
दसमी को रेवती व शुक्रवार
एकादशी को रोहिणी व शनिवार का संयोग पूर्णतः शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य है

(३) गृहप्रवेश में भौमवार तथा अश्विनी के संयोग से सिद्धि-योग । यात्रा में शनि रोहिणीजन्य सिद्धि-योग सर्वथा वर्जित है ।[2]

---

१. अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि ।
आयोगो हन्यते तत्र सिद्धियोगः प्रवर्तते ॥
—राजमार्तण्ड

अयोगे सुयोगेऽपि चेत्स्यात्तदानीययोगं निहत्यैव सिद्धि ॥
—मु० चिन्ता०

२. भौमाश्विनीं प्रवेशे च प्रयाणे शनि रोहिणीम् ।
गुरु पुष्यं विवाहे च सर्वथा परिवर्जयेत् ॥ —राजमार्तण्ड

करण

करण ग्यारह होते हैं, जिनके नाम क्रमशः बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाग तथा किंस्तुघ्न हैं, इनमें प्रथम सात करण चरसंज्ञक तथा शेष चार स्थिरसंज्ञक हैं । इनमें प्रथम सात करणों में शुभ कार्य तथा अन्तिम चार करणों में पितृ कार्य करना ऋषयादेश है ।

भद्रा

समुद्र-मन्थन के समय जब गरल पान कर शिव ने हुंकार भरी एवं अपने शरीर पर दृष्टि डाली, तो उनके दृष्टि-आघात से गर्दभ मुख, तीन चरण, सप्त भुजा, काला वर्ण, लम्बे व टेढ़े दाँत, प्रेतवाहन तथा मुख से अग्नि उगलती हुई देवी प्रकट हुई, जिसे देवों ने 'भद्रा' के नाम से संबोधित किया ।

भद्रावास

चन्द्रराशि	भद्रावास	भद्रामुख	फल
४, ५, ११, १२	मृत्युलोक	सम्मुख	शुभफलद
१, २, ३, ८	स्वर्गलोक	ऊर्ध्वमुख	सामान्य
६, ७, ९, १०	पाताललोक	अधोमुख	अनिष्ट

भद्रा दिशा

तिथि	दिशा
३	ईशान
४	पश्चिम
७	दक्षिण
८	अग्निकोण
१०	वायव्य
११	उत्तर
१४	पूर्व
१५	नैऋत्य

फल

जिस दिशा में भद्रा हो, उस दिशा की ओर यात्रा करना वर्जित है ।

भद्रा अंग

घटी	भद्रा अंग	फल
५	मुख	कार्यनाश
१	गर्दन	मृत्यु
११	वक्षःस्थल	द्रव्यनाश
४	नाभि	कलह
६	कमर	बुद्धिनाश
३	पुच्छ	कार्यसिद्धि

भद्रासंज्ञा

कृष्ण पक्ष की भद्रा को "वृश्चिकी" तथा शुक्ल पक्ष की भद्रा को 'सर्पिणी' कहा जाता है।

विशेष

१. यदि दिन की भद्रा रात्रि को, और रात्रि की भद्रा दिन तक रहे तो भद्रा-दोष नहीं रहता।[1]

२. मीन संक्रान्ति में भद्रा-दोष नहीं लगता।[2]

३. मध्यान्ह के बाद भद्रा-दोष शान्त रहता है।

जन्म राशि

पाणिग्रहण संस्कार, यात्रा-मांगलिक कार्य तथा गोचर, विचार में जन्मराशि चिंतनीय है।

नाम-राशि

देश, ग्राम, गेहारंभ, युद्ध, वादविवाद, नौकर रखना, व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मंत्रसिद्धि आदि के लिए नाम-राशि से ही विचार करना चाहिए।

संक्रान्ति

एक राशि पर संक्रमणकाल (सूर्य काल) को संक्रान्ति कहते हैं। एक वर्ष में बारह संक्रान्तियां होती हैं। सूर्य संक्रान्ति के पूर्व १६ घटी और बाद में १६ घटी तक संक्रांति

१. रात्रिभद्रा यदन्हि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि।
न तत्र भद्रा दोषः स्यात् साभद्रा भद्रदायिनी ॥ —पीयूषधारा

२. भद्राय भद्रा न शंभोर्जपे मीनराशि योगस्तथाप्यर्चने।
होमकाले शिवायास्तमा तद्भुवः साधने सर्वकालोऽयमेशेनयो ॥
—ज्योतिर्विदभरण

पुण्यकाल कहा जाता है।

मतभेद से विभिन्न संक्रान्तियों के निम्न पुण्य काल हैं-

संक्रान्ति	पुण्यघटी
मेष	१० घटी पूर्व एवं १० घटी पश्चात् तक।
वृष	१६ घटी पूर्व।
मिथुन	१६ घटी पश्चात्।
कर्क	३० घटी पूर्व।
सिंह	१६ घटी पूर्व।
कन्या	१६ घटी पश्चात्।
तुला	१० घटी पूर्व एवं १० घटी पश्चात्।
वृश्चिक	१६ घटी पूर्व।
धनु	१६ घटी पश्चात्।
मकर	४० घटी पश्चात्।
कुंभ	१६ घटी पूर्व।
मीन	१६ घटी पश्चात्।

सूर्य-संक्रान्ति में दानादि शुभ है।[1]

चंद्रमा

चन्द्रमा नित्य ही मार्गी एवं उदित रहता है। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी चतुर्दशी को चन्द्रमा वृद्ध, अमावस्या को मृत एवं शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को बाल अवस्था में रहता है।

चंद्र गोचर फल

जन्म	अन्नप्राप्ति
दूसरे भाव	वित्त-नाश
तीसरे ,,	द्रव्य-लाभ
चौथे ,,	कमर-रोग
पांचवें ,,	कार्य-नाश
छठे ,,	धन-लाभ
सातवें ,,	द्रव्य-लाभ

१. रवेः संक्रमणं राशौ संक्रान्तिरिति कथ्यते।
स्नान दान जप श्राद्धः होमादिषु महाफलम् ॥
—पुरुषार्थ चिन्तामणि

आठवें भाव	मृत्यु
नवें ,,	राज्य-भय
दसवें ,,	सुख
ग्यारहवें ,,	लाभ
बारहवें ,,	रोग-वृद्धि

शुभचन्द्र

गर्भाधान, राज्याभिषेक, अन्नप्राशन, विवाह, जनेऊ, यात्रा, दान, व्रतोपवास आदि में द्वादश चन्द्र शुभ माना गया है।[1]

जन्मचन्द्र

यात्रा, युद्ध, विवाह, गृह प्रवेश एवं क्षौर कर्म, ये पांच जन्मचन्द्र को वर्जित हैं।[2]

स्त्री चन्द्र बल

विवाह, रजोदर्शन, गर्भाधान तथा प्रसवपूर्व कर्म में स्त्री के नामराशि-चन्द्र से विचार करना चाहिए, एवं अन्य समस्त कार्यों में पति के नाम से ही विचार करना चाहिए।[3]

चन्द्र-दिशा

राशि	चन्द्र दिशा	फल
मेष, सिंह, धनु	पूर्व	शुभ
वृष, कन्या, मकर	दक्षिण	अशुभ
मिथुन, तुला, कुम्भ	पश्चिम	शुभ
कर्क, वृश्चिक, मीन	उत्तर	शुभ

गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने
पा[illegible] गृहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशमः शुभः ॥
—दैवज्ञ कल्पद्रुम

२. जन्मगः फलदश्चन्द्रः पंचकर्मेषु वर्जयेत् ।
यात्रा युद्ध विवाहेषु प्रवेशे क्षौर कर्मणि ॥
—फलित

विवाहकार्ये कुसुमप्रतिष्ठा गर्भप्रतिष्ठा वनिता विशुद्धौ ।
[illegible]न्नि कार्याणि [illegible] पत्यौ विहीनं प्रमदात्यमशुद्धया ॥
—राज मार्तण्ड

चन्द्रवाहन

चंद्रराशि	वर्ण	वाहन	फल
मेष, सिंह, वृश्चिक	रक्त	हाथी	युद्ध
वृष, कर्क, तुला	श्वेत	बैल	सिद्धिदायक
मिथुन, धनु, मीन	पीला	अश्व	लक्ष्मीप्रदायक
कन्या, मकर, कुम्भ	काला	महिष	भयदाता

त्रैलोक्य में चन्द्रवास

तिथि को पांच से गुणाकर १ जोड़कर योगफल को ३ से भाग दें, शेष ० बचे तो मृत्युलोक में, १ बचे तो स्वर्गलोक में तथा २ बचे तो पाताललोक में जानना चाहिए।

फल

गृहनिर्माण, कूपखनन, यज्ञ, कृषि, कार्य, विद्यारंभ यात्रादि में पातालस्थ चन्द्रमा वर्ज्य है।

स्वर्ग व मृत्युलोक में चन्द्र शुभ एवं पाताल लोक में अनिष्टकर माना गया है।

घात चन्द्र

जन्मराशि	घातराशि (पुरुष)	घातराशि स्त्री
मेष	मेष	मेष
वृष	कन्या	धनु
मिथुन	कुंभ	धनु
कर्क	सिंह	मीन
सिंह	मकर	वृश्चिक
कन्या	मिथुन	वृश्चिक
तुला	धनु	मीन
वृश्चिक	वृष	मिथुन
धनु	मीन	कन्या
मकर	सिंह	वृश्चिक
कुंभ	धनु	मिथुन
मीन	कुंभ	कुंभ

विवाह, अन्न, तीर्थयात्रा, यात्रा एवं शुभ कार्यों में घात-चंद्र का विचार न करें, पर कुमारी-पूजन, वृद्ध, राज्यसेवा

विद्या, वाहन आदि में घात चन्द्र का विचार चिंतनीय है।[1]

गुरु शुक्रास्त में वर्ज्य कार्य

गृहारंभ, कूपखनन, व्रतोद्यापन, वधू-आगमन, यज्ञ, दान, श्राद्ध, श्रावणी कर्म, त्रिपिण्डी श्राद्ध, वर्षोत्सर्व, देवप्रतिष्ठा, दीक्षा, मंत्रोपदेश, विवाह, यज्ञोपवीत, तीर्थयात्रा, संन्यासग्रहण, राज्याभिषेक आदि।

सिंहस्थ गुरु

सिंह राशिगत गुरु जब सिंह के नवांश में (अर्थात् १३-२० से १६-४० अंश तक) हो तो विवाहादि कार्य वर्ज्य हैं।[2]

'मुहूर्त चिन्तामणि' में मघा के चार तथा पूर्वा फाल्गुनी के प्रथम चरण पर गुरुगोचर को ही वर्ज्य माना है। "मघादि पंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निंदितः।"

जो कार्य सिंहस्थ गुरु में वर्ज्य है, वही शुक्र के लिए भी वर्जनीय है।

भू-रुदन

मास की अंतिम घड़ी, वर्ष का अंतिम दिन, अमावस्या, होलिका तथा प्रत्येक मंगलवार को भू-रुदन होता है। अतः प्रत्येक शुभ कार्य भू-रुदन में वर्ज्य है।

भू-हास्य

पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, गुरुवार, पुष्य, श्रवण नक्षत्रों में पृथिवी हँसती है। अतः प्रत्येक शुभ-कार्य में यह समय अनुकूल होता है।

---

१. तीर्थयात्रा विवाहान्नप्राशनोपनयनादिषु,
मांगल्य सर्वकार्येषु घात चन्द्रं न चिंतयेत्।
युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा,
राजसेवा वाहनादौ घातचंद्रं विवर्जयेत्॥
—पीयूषधारा

२. सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वं देशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥
—राजमार्तण्ड

भू-शयन

(क) सूर्य-संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१, तथा २४वें -दिन धरती शयन करती है।

(ख) सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें नक्षत्र में पृथिवी शयन करती है।

कृषि, हवन समस्त शुभ कार्यों में भू-शयन काल वर्ज्य है।

भू-रजस्वला

(क) सूर्य-संक्रान्ति से १, ५, १०, ११, १६, १८ तथा १९वें दिन भूमि रजस्वला होती है।

(ख) पंचमी को भौमवार, षष्ठी को रविवार, सप्तमी को शुक्रवार हो तो इससे आगे तीन दिनों तक पृथिवी रजस्वला रहती है।

समस्त शुभ कार्यों, प्रतिष्ठा, यज्ञादि से भू-रज समय त्याज्य है।

देव-शयन

आषाढ़ शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक देव-शयन करते हैं, अतः इस अवधि में गृहनिर्माण, गृहारंभ, विवाह, यज्ञोपवीत, दान, यात्रा, यज्ञादि कार्य, देव-प्रतिष्ठा आदि त्याज्य है।

अग्निवास

शुक्ला प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गणना कर योग में १ जोड़ सूर्यवार से गणना कर वार-संख्या जोड़ें, तथा इस संख्या को ४ से भाग दें, शेष ० बचे तो अग्नि पृथिवी पर १ बचे तो आकाश में, दो बचे तो पाताल में तथा तीन बचे तो पृथिवी पर जानें।

फल—पृथिवी पर अग्निवास सुखकर, आकाश में प्राण-नाश तथा पाताल में धननाश फल देती है।

होमादि कार्यों में इसका विचार करना चाहिए। पर विवाहादि जन्मदिन, यात्रा, पुत्रोत्पत्ति, दुर्गा-सम्बन्धी यज्ञकार्य में अग्निवास का विचार नहीं करना चाहिए।

षोडश संस्कार

महर्षियों ने निम्न सोलह संस्कार माने हैं—

१. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म,

५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकरण, ९. यज्ञोपवीत, १०,११, १२, १३, चतुर्वेद व्रत, १४. समावर्तन, १५. विवाह, १६. अन्त्येष्टि ।

अब आगे के पृष्ठों में प्रमुख मुहूर्तों का विवेचन दिया जा रहा है—

१. नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १५ ।
वार— बुध, गुरु, शुक्र ।
नक्षत्र—अ०, रो०, पुन०, पु० पू० फा०, उ० भा०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

विवाह, यज्ञ, अनुष्ठान, संवत्सरारंभ, राज्यप्रदत्त वस्त्रालंकार, विशेषोत्सव, तथा श्राद्ध में बिना मुहूर्त के भी वस्त्र पहने जा सकते हैं ।[1]

२. रजस्वला स्नान मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्णपक्ष) २, ३, ५, ७, १०, १२, १५, दोनों पक्ष ।
वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र ।
नक्षत्र— अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, ध० रे० ।

टिप्पणी

रजस्वला-स्नान तीन दिनों के बाद ही होना चाहिए, क्योंकि इससे पहले वह शुद्ध नहीं होती ।[2]

---

१. विवाहे च यज्ञे तथा वत्सरादौ,
नृपेणापि दत्त मुदायच्च वस्त्रम् ।
श्मशाने विशेषोत्सवे श्राद्ध पक्षे,
युधिष्ठिये दिनादावथो धारणीयम् ॥ —बृहज्ज्योतिस्सार

२. प्रथमेऽह्नि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातकी ।
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽह्नि शुध्यति ॥
—मनु०

३. सीमान्तोन्नयन् मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १० ।
वार—सू० मं० गु०
नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, मू० श्र० ।
लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११

टिप्पणी

गर्भधारण के छठे या आठवें मास में जब मासाधिपति निर्बल हो या अस्त हो, तब यह विधि सुरक्षा- हेतु की जाती है। मुहूर्त के दिन स्त्री चन्द्रबल प्रबल होना आवश्यक है ।

गर्भधारण से प्रत्येक मास के अधिपति निम्न प्रकार होते हैं—

१. गर्भ मास	शुक्र
२. ,,	मंगल
३. ,,	गुरु
४. ,,	सूर्य
५. ,,	चन्द्र
६. ,,	शनि
७. ,,	बुध
८. ,,	लग्नेश
९. ,,	चन्द्र
१०. ,,	सूर्य

४. विष्णु पूजा मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२ (शुक्ल पक्ष) ।
वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र ।
नक्षत्र— रोहिणी, पुष्य, श्रवण ।

टिप्पणी

गर्भ के आठवें महीने में गर्भरक्षण-हेतु शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी विष्णु की पूजा कर स्वर्ण-प्रतिमा का दान दिया जाता है ।

५. पितृ गृह जाने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्ण पक्ष) २, ३, ५, ७, १०, (शुक्ल पक्ष) १५।

वार—चन्द्र, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अश्वि०, कृ, रो०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, जब लग्न शुद्ध हो।

टिप्पणी

प्रसव से पूर्व जब स्त्री पतिगृह से पिता के घर जाती है या अकारण ही पीहर जाय, तब इस मुहूर्त का उपयोग आवश्यक है।

भद्रा, व्यतिपात, रिक्ता-तिथि त्याग तथा पत्नी के चन्द्रबल को प्रमुखता दें।

६. षष्ठी पूजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ९, १०, १२ (या जो भी पाँचवाँ दिन हो)।

वार—रवि, मंगल, शनि को छोड़कर।

टिप्पणी

पुत्र-जन्म के पाँचवें दिन की रात्रि को 'जीवन्ती देवी, की षोडशोपचार पूजा की जाती है। इसे षष्ठी पूजन कहते हैं, कुछ विद्वान् षष्ठी देवी को 'कात्यायनी देवी' भी कहते हैं। (षष्ठं कात्यायनीतिच—मा० पु०) इस पूजन में सूतक-दोष नहीं लगता। कहीं-कहीं १४वें दिन, २१वें दिन या ३१वें दिन भी ऐसी पूजा की जाती है।

७. सूतिका-स्नान (सूर्य-पूजन) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, १५।

वार—सूर्य, मंगल, गुरु।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृग०, उत्तरा ३, ह०, चि० स्वा०, अनु०, रे०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९।

टिप्पणी

प्रथम सूतिका-स्नान पुत्रजन्म के सातवें या नवें दिन होता है।

८. नामकरण संस्कार मुहूर्त

तिथि—१ (कृ०), २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु० श्र०, ध०, रे०।

लग्न—२, ४, ६, ७, ९।

चन्द्रमा—२, ३, ५, ९।

टिप्पणी

जीवन में ख्याति, यश, सम्मानादि नाम पर ही मिलता है, अतः नाम अत्यन्त सोच-विचारकर रखना चाहिए। पितृ-कुल एवं मातृकुल की तीन पीढ़ी तक का नाम बालक को न दे।

नामकरण जन्म से १०, १२, १६, १८, २०, २२ या ३०वें दिन कन्या का, तथा १, ३, ५, ७, १०, ११ या १३वें दिन पुत्र का करना चाहिए।

प्रकारान्तर से विप्र का १० या १२वें दिन, क्षत्रिय का १३वें दिन, वैश्य का १६वें या २०वें दिन तथा शूद्र का ३०वें दिन नामकरण करना चाहिए।

नामकरण पिता, या कुलवृद्ध करें।[1] उत्तराभिमुख पिता बैठ, उज्ज्वल वस्त्र पहन कुलदेव का स्मरण कर नामकरण करे।[2]

कुयोग, व्यतिपात, श्राद्ध, ग्रहण तथा निर्बल चन्द्र के दिन नामकरण संस्कार न करे। चर लग्न भी न ले।

यदि तीन कन्याजन्म के बाद पुत्रजन्म या तीन पुत्रजन्म के बाद कन्याजन्म हो तो "त्रिकदोष" शान्त कर देना चाहिए।

---

१. पिता कुर्यादन्यो वा कुलवृद्धः" —मु० चि०

२. पुत्र जन्मनि यज्ञे च तथा संक्रमणे रवे।
राहोश्च दर्शने स्नानं प्रशस्तं नान्यथा निशि॥ —वसिष्ठ

९. जल-पूजन मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ९, ११, १२, १५ (शुक्ल) ;
वार—च०, बु०, गु० !
नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, श्र० ।

टिप्पणी

पुत्रजन्म के एक मास बाद या २६ दिनों बाद जलपूजन होता है। इसमें पुत्र-माता वापी, कूप, तड़ाग पर जाकर जल-पूजन करती है।

जलपूजन में श्राद्ध-पक्ष-दिन, क्षयमास, चैत्र, पौष, तथा कुयोग का त्याग करना चाहिए।[1]

१०. दुग्धपान मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, १२,१५ (शुक्ल) ।
वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, ह०, चि०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।
लग्न—२, ६, ४, ६, ७, ६, १२ ।

टिप्पणी

जन्म के २१वें या ३१वें दिन माता के स्तनपान के अतिरिक्त धात्री स्तनपान करावे या गोदुग्धपान करावे।

शंख में गोदुग्ध लेकर भी पान कराया जाता है। इस मुहूर्त में राहुमुख, योगिनीवास एवं रुद्रवास का भी विचार करना चाहिए—

राहुमुख विचार

वार	राहुमुख-दिशा
सूर्य, गुरु	पूर्व
मंगल	पश्चिम
बुध, शनि	उत्तर
चंद्र, शुक्र	दक्षिण

१. पुनर्वसु द्वये हस्ते मृग मूलानुराधयो।
श्रवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तिथौ जलपूजनम् ॥
गुरौ शुक्रेऽस्तगे चैत्रे पौषे वा मलमासके।
मासपूर्वो विरुद्धा हे न कुर्यात् जलार्जनम् ॥ —मुहूर्त गणपति

जिस ओर राहुमुख हो, उस दिशा की ओर बालक का शिर रखकर दुग्धपान नहीं कराना चाहिए।

योगिनीवास

तिथि	योगिनीवास-दिशा
१,९	पूर्व
२,१०	उत्तर
३,११	अग्नि
४,१२	नैऋत्य
५,१३	वायव्य
६,१४	पश्चिम
७,१५	दक्षिण
८,३०	ईशान

दुग्धपान के समय योगिनी बाईं ओर रहे।

रुद्रवास

सूर्योदय से १-१ घटी पर्यन्त रुद्र क्रमशः पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान दिशा में रहता है। एक दिन-रात में रुद्रवास-क्रम तीन बार हो जाता है।

दुग्धपान-समय रुद्र-सम्मुख न हो।

११. दोलारोहण (झूला) मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १५ (शु) ।
वार—चं० बु०, गु० ।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ या ३२वें दिन प्रथम बार झूले में सुलाया जाता है।[1]

१२. निष्क्रमण (घर से बाहर जाने का) मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ९, १२, १३, १५ (शु) ।
वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

१. दोलोत्सवे सुपर्यंक जननि द्रा सुवासिनी।
योगशायी हरिर्ध्यात्वा स्वापयेत्प्राक् शिरः शिशुम् ॥

नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, रो०, पुन०, पु०, हस्त०, ध०।
लग्न—२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०।

टिप्पणी

बालक के प्रथम बार घर से बाहर जाने को निष्क्रमण कहते हैं, यह मुहुर्त १२वें दिन या तीसरे महीने होना चाहिए।[1]

सर्वप्रथम देवालय जाकर पूजार्चन करे, ब्राह्मणों से शुभाशीष ले, फिर सर्वप्रथम बच्चे को पितृकुल के किसी स्वजन के घर ले जावे।

१३. कच्छा बंधन (वस्त्र धारण) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)।
वार—बु० गु० शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, चि०, स्वा० वि०, अनु० रे०।

टिप्पणी

बालक को सर्वप्रथम काले डोरे की करधनी पहनावे, एवं फिर पैरों में कच्छा पहनावे।[2]

१४. भूम्योपवेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १४ (दोनों पक्ष)।
वार—चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, रे०, मृग०, पुष्य०, उ० ३, ह०, अनु० अभि०।
लग्न—२, ५, ८, ११।

टिप्पणी

जन्म से पांचवें महीने में, चर लग्न में, मंगल बली में वाराह भगवान् की पूजा करके बालक को सर्वप्रथम जमीन पर बिठाना चाहिए।

बिठाने से पूर्व निम्न मन्त्र का उल्लेख करना चाहिए—

१. तुर्ये निष्क्रमणं मासि यात्रोक्त दिवसे स्मृतम्।
जन्मतो द्वादशाहे वा कुर्यान्मिंगलपूर्वकम्॥ —मु० ग०
२. कच्छाबन्धः सिते पक्षे सुदिने करणचके।
ध्रुवर्क्षेऽदिति युग्मेऽश्विपित् पौष्णेन्दुवासरे॥ —गणक मंडन

रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शिशुम्।
आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

जीविका ज्ञान

इसी दिन बालक के सामने अस्त्र-शस्त्र, पुस्तक, दवात, लेखनी, वस्त्र, स्वर्ण, चाँदी, मशीन, मोटर, कल-पुर्जे, विद्युत-उपकरण आदि रक्खें। बालक सर्वप्रथम जिस वस्तु का स्पर्श करे वही कालान्तर में उसकी जीविका का साधन होगा, ऐसा समझना चाहिए।

१५. अन्नप्राशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ९, १२, १३, १४, १५ (शुक्ल पक्ष)।
वार—चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, रे०।
लग्न—२, ३, ४, ५, ७, ९, १०।

टिप्पणी

जन्म से ६, ७, ८, १०, या १२वें महीने में बालक को पहली बार अन्न खिलाया जाता है, इसे अन्नप्राशन कहते हैं।

दिन का पूर्वार्द्ध, चन्द्रबल आवश्यक है तिथिक्षय एवं रात्रि वर्जित है।

१६. कर्णवेध मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२।
वार—चं०, बु०, गु०।
नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, श्र०, रे०।
लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९।

टिप्पणी

जन्म से १२ या १६वें दिन अथवा छठे या सातवें मास में कर्णछेदन होना चाहिए।

बालक को पूर्वाभिमुख बिठाकर बालक का पहले दाहिना फिर बायाँ, तथा कन्या का पहले बायाँ तथा फिर दाहिना कर्णछेदन किया जाना चाहिए।

स्वर्णकार द्वारा या सौभाग्यवती स्त्री द्वारा सूची से

कर्णछेदन होना चाहिए।[1]

तीसरे दिन गर्म जल से कर्णधोवन हो।

१७. कन्या-नासिका-वेध मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, हस्त०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

टिप्पणी

कर्णवेध के दिन या मास में कन्या की नासिका का छेदन होना चाहिए।[2]

१८. जन्मदिन (वर्ष दिन) मुहूर्त

जिस तिथि को जन्म हो, वर्ष के पश्चात् उसी तिथि को वर्षगांठ मनानी चाहिए। प्रातः मंगल स्नान करवाकर सुसज्जित वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कर गणपति कुल-देवता का पूजन करे।

जन्मदिन में तिल-प्रयोग आयुवर्द्धक है।[3] इसी दिन आम्रपत्रों की १०८ आहुतियां आरोग्यवर्धक एवं आयुवर्धक कही गई हैं।

जन्मदिन को हजामत, यात्रा, स्त्रीसंग, कलह, मांसभक्षण, हिंसा आदि वर्जित है।

१९. चूड़ाकर्म (क्षौर कर्म) मुहूर्त

मास—चैत्र, वैशाख, आषाढ़ (शुक्ल ११ से पूर्व)।

तिथि—२, ३, ५, ७, ९, १२, १४, १५ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

---

१. सौवर्णी राजपुत्रस्य, राजती विप्रवैश्ययो।
शूद्रस्य त्वायसी सूची मध्याभाष्टांगुलात्मिका॥

२. कर्णवेधोक्तभे शस्तं कन्याया घ्राणवेधनम्।
त्र्युत्तराजलपस्वातौ पूर्वाह्ने शुक्ल पक्षके॥
—मुहूर्त गणपति

३. तिलोद्वर्ती, तिलस्नायि तिलहोमो तिलप्रदः।
तिलभुक् तिलवाणी च षट्तिली नावसीदति॥

नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

टिप्पणी

जन्म से १, ३, ५, ७, या विषम वर्षों में उत्तरायण सूर्य में कुल-परम्परा के अनुसार चौल कर्म होना चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार क्षौर कर्म ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगल, तथा वैश्यों एवं शूद्रों को शनिवार का प्रयोग करना चाहिए।[1]

दक्षिणायण, देवशयन, निर्बल चन्द्रमास के अन्त में, संध्या, रात्रि या युद्ध-समय में यह कार्य न करें।

माता प्रसूता या रजस्वला हो, तब भी यह कर्म नहीं करना चाहिए।

क्षीण चन्द्र होने पर मृत्यु, क्षीण मंगल हो तो शस्त्राघात, शनि हो तो पंगु, सूर्य हो तो ज्वर होता है।

२०. अक्षरारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवियुक्त मास।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, आर्द्रा०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ९।

टिप्पणी

सर्वप्रथम गणपति सरस्वती का पूजन कर गुरु-पूजन करे, तथा घृताहुति (१०८ बार) दे, फिर पूर्वाभिमुख गुरु के सामने बैठकर अक्षरारंभ करे।

विप्र ५वें वर्ष, क्षत्रिय ६ या ८वें वर्ष तथा वैश्य-शूद्र को ९वें वर्ष अक्षरारंभ का आदेश है।

---

१. वाग्ग्रहाणां वारादौ, विप्राणां शुभदं रवे।
क्षत्रियाणां क्षमासूनोर्विट् शूद्राणां शनौ शुभम्॥
—ज्योतिर्निबन्ध

२१. विद्यारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवि।

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, ११, १२, १५।

वार—सूर्य०, गुरु०, शुक्र०।

नक्षत्र—अश्वि०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, श्ले०, पूर्वा० ३, ह०, चि०, श्र०, ध०, श०।

टिप्पणी

भद्रा त्याज्य है।

सामान्य अक्षर सीखने के पश्चात् कुलविद्या या जीविकोपार्जन हेतु जो सीखा जाता है, उसे विद्यारम्भ कहते हैं।

२२. यज्ञोपवीत मुहूर्त

यज्ञोपवीत संस्कार को कहीं उपनयन, कहीं व्रतबन्ध और कहीं मौञ्जिबन्धन के नाम से भी पुकारा जाता है। ब्राह्मण इसीलिए द्विज कहलाने का अधिकारी है कि एक बार वह गर्भजन्म लेता है, एवं दूसरी बार जनेऊ धारण करने पर ब्राह्मण जन्म लेता है।

यज्ञोपवीत काल

ब्राह्मण ५ या ८वें वर्ष में, क्षत्रिय ६ या ११वें वर्ष में, तथा वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार ८ या १२वें वर्ष में होना चाहिए।

८ से १६वें वर्ष में ब्राह्मण का, ११ से २२ तक क्षत्रिय का, तथा १२ से २४ वर्ष के बीच वैश्य का यज्ञोपवीत मध्यम फलद होता है।[1]

मास

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन। पर ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य, तथा आषाढ़ मास में विप्र-

१. विप्राणां व्रतबन्धन निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टिमे,
वर्षे वाप्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे।
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदितं गौणं तदाहुर्बुधाः॥
—मुहूर्त चिन्तामणि

यज्ञोपवीत वर्ज्य है। जन्ममास भी त्याज्य समझना चाहिए, पर जरूरत पड़ने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार किया जा सकता है।[1] "निर्णय सिन्धु" के अनुसार जन्मपक्ष छोड़कर अगले पक्ष में या पिछले पक्ष में यज्ञोपवीत हो सकता है—

जन्ममासे तिथौ भे च विपरीत दले सती।
कार्यं मंगलमित्याहुर्गर्गभार्गव शौनकाः॥

नक्षत्र

हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रो०, आ०, स्वा०, पुन०, श्र०, ध०, श०, मू०, मृग०, रे०, चि०, अनु०, तीनों पूर्वा तथा आर्द्रा।

पक्ष—शुक्ल पक्ष उत्तम तथा कृष्ण पक्ष मध्यम।

तिथि—२, ३, ५, १०, ११, १२ (शुक्ल), १, २, ३, ४, ५ (कृष्ण)।

समय—मध्याह्न पूर्व।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

विशेषतः ब्राह्मण गुरु-शुक्र, क्षत्रिय सूर्य-मंगल, वैश्य बुध तथा शूद्र शनिवार को यज्ञोपवीत दें।

लग्न—२, ३, ५, ६, ९।

गुरु-शुक्र स्व या उच्च राशिस्थ, मूलत्रिकोणस्थ या केन्द्रत्रिकोणस्थ हो तो विशेष शुभ माना गया है।

शाखेश

ऋग्वेदी ब्राह्मण	गुरु
यजुर्वेदी "	शुक्र
सामवेदी "	मंगल
अथर्ववेदी "	बुध

यज्ञोपवीत लग्नकुण्डली में शाखेश का प्रबल होना अत्यावश्यक है।

१. जन्ममासे निषेधेऽपि दिनादि दश वर्जयेत्।
आरभ्य जन्म दिवसाच्छुभाः स्युस्तिथयोऽपराः॥
—राजमार्तण्ड

नक्षत्र-वेध

अब सप्त शलाका यंत्र दिया जा रहा है। चक्र में जिस नक्षत्र में यज्ञोपवीत हो, तब ठीक उसके सामने के नक्षत्र पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा उस नक्षत्र का वेध हो जाता है। उदाहरणार्थ यदि पुष्य नक्षत्र को यज्ञोपवीत दिया जा रहा हो तो उसके सामने के नक्षत्र ज्येष्ठा पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

यज्ञोपवीत-मुहूर्त में नक्षत्र-वेध देखना परमावश्यक है।[1]

सप्त शलाका वेध यंत्र

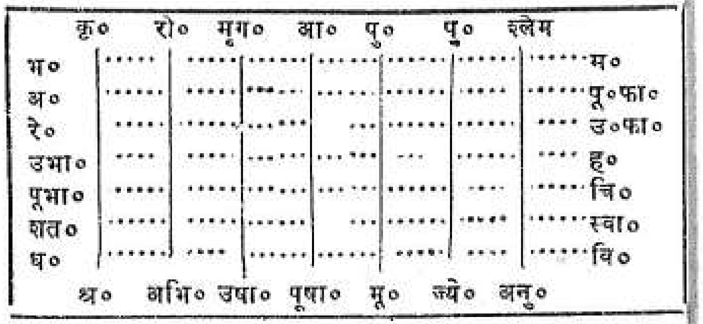

त्रिबल

मुहूर्त से पूर्व बटुक का त्रिबल देख लेना चाहिए। बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु एवं चन्द्रबल का विचार परमावश्यक है। इन तीनों में से एक भी हीन बली हो तो बटुक का सर्वनाश हो जाता है।[2]

रोगपंचक

गत तिथि में लग्न मिलाकर ९ से भाग दें, शेष ८ बचें तो रोगपंचक समझें। यह तिथि त्याज्य है।

१. कर्णवेधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा।
प्राशनेचाद्य चूडायां विद्धमृक्षं परित्यजेत्॥ —दीपि०

२. वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतक्रिया हिता।
सर्वेषां वा गुरौ चन्द्रे सूर्ये च बलशालिनी॥

रोगबाण

किसी राशि के ९, १८, २७वें अंश पर सूर्य हो तो रोगबाण होता है, अतः वह दिन भी त्याज्य समझें।

सूर्य-चन्द्र गुरु शुद्ध

वर का सूर्य	दोनों का चंद्र	कन्या का गुरु	फल
३, ६, १०, ११	१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११,	२, ५, ७, ९, ११	शुभ
१, २, ५, ७, ९	अस्त या क्षीण	१, ३, ६, १०	सम (पूज्य स्थान
४, ८, १२	४, ८, १२	४, ८, १२	अशुभ

यज्ञोपवीत एवं विवाह-मुहूर्त में शुभ सूर्य-चंद्र-गुरु ही लेने चाहिए, सम ग्रह हो तो पूजा करने से दोष मिट जाता है, पर अशुभ ग्रहों का समावेश तो सर्वथा वर्ज्य है।

अपवाद

(१) गुरु-सूर्य-चन्द्र की ब्राह्मण, दुगुनी, क्षत्रिय तिगुनी, वैश्य चौगुनी पूजा करे, तो गुरु-चंद्र-सूर्य-दोष मिट जाता है।[1]

(२) कुछ मतों के अनुसार बटुक १४ साल से बड़ा एवं कन्या १५ साल से बड़ी हो जाय, तो ४, ८ १२वां गुरुदोष भी नहीं लगता। हां, गुरु पूजा द्विगुनी आवश्यक है।[2]

(३) यदि सूर्य मेष राशि पर तथा गुरु कर्क राशि का हो, तब ४, ८, १२वें होने पर भी इनका दोष नहीं रहता।[3]

(४) चैत्र मास में गुरु निर्बल होने पर भी उपनयन-संस्कार में दोष नहीं लगता।[4] इसमें सूर्य मीन राशिगत ही हो।

१. सदा सपर्या द्विगुणात्रिदुष्टे शस्ता गुरावादि भुवामपादौ।
तथा नृपाणां त्रिगुणा विशां सा चतुर्गुणात्मीय बलिक्रियार्हा।
—ज्योतिर्विदाभरण

२. व्रते जन्मत्रिकारिस्थो जीवोऽपिष्टोऽर्चनात्सकृत्।
शुभोऽतिकाले सुयष्टि व्ययस्थो द्विगुणार्चनात्॥ —निर्णय सिन्धु

३. द्वितीय तुर्यांकगत प्रभाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभप्रदः॥

४. गोचराष्टक वर्गाभ्यां यदि शुद्धिर्न लभ्यते।
तदोपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते रवौ॥

(५) सिंह और मकर राशि पर गुरु में उपनयन सर्वथा त्याज्य है।

(६) माता रजस्वला होने पर पुत्र का यज्ञोपवीत सर्वथा वर्ज्य है।

उपनयनकर्ता

उपनयन माता-पिता अपने हाथों से ही दें, उनके न होने पर भाई-भौजाई, दादा-दादी या चाचा-चाची अथवा पितृकुल का कोई सदस्य दे।[1]

उपनयन में निषेध

कृष्णपक्ष की षष्ठी से अमावस्या तक तिथि, प्रदोष, अनध्याय, शनिवार दोपहर के बाद का समय, तथा गलग्रह-समय सर्वथा त्याज्य करे।

२३. वेदारंभ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२।

वार—बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा० अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—३, ६, ९, १२।

२४. विवाह-मुहूर्त

जीवन का सर्वश्रेष्ठ संबंध विवाह है, जिसमें पति-पत्नी दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। चाहे कितने ही धन-धान्य, गाय, घोड़े, राज्यश्री आदि से सम्पन्न कुल हो, फिर भी निम्न दशकुलों का त्याग कर देना चाहिए—

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्शसम्।
क्षय्यामया व्यपस्मारिश्वित् कुष्ठि कुलानिच ॥ मनु०

अर्थात्—सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से हीन, वेदविहीन, शरीर पर लम्बे-लम्बे रोम रखने वाला, बवासीर, क्षय, दमा,

१. पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गोत्रजाग्रजा।
उपनयनेऽधिकारी स्यात् पूर्वाभावे परः परः ॥ — पीयूषधारा

२. प्रत्युद्वाहो नैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम्। —ज्योतिनिबन्ध

३. नैवैक जन्ययोः पुंसोरेक जन्येतु कन्यके। —नारद पुराण

खांसी, आमाशय, मिरगी, श्वेत कुष्ठ और गलित कुष्ठयुक्त कुल की कन्या या वर स्वीकार नहीं करना चाहिए।

पत्नी कैसी हो ?

अव्यंगांगीं सौम्यनाम्नी हंसवारण गामिनीय्।
तनुलोककेश दशनां मृद्वंगी मुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ मनु०

अर्थात्—जिसके सरल मृदु सौम्य अंग हों, जिसका नाम सुन्दर हो, हंस या हथिनी के समान चाल हो, सूक्ष्म भूरे रोम हों, बाल और दांत चमकीले हों, तथा कोमलांगी सलज्ज कन्या के साथ विवाह करना शुभ है।

निषेध

एक ही वर को दो कन्याएँ न दें[2], और न दो सहोदर भाइयों को सहोदरा कन्याएँ दें[3] तथा द्रव्य लेकर कन्या देना भी पापवर्धक है।[1]

विवाह-समय

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥
माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च।
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम्। —मनु०

अर्थात्—लड़की आठ वर्ष में गौरी, नवें वर्ष में रोहिणी तथा दसवें वर्ष में कन्या कहलाती है। माता-पिता तथा बड़ा भाई यदि रजस्वला कन्या देखता है, तो वे नरक में पड़ते हैं।

अष्टकूट

वरकन्या के विवाह-पूर्व आठ बातों पर विचार किया जाता है। ये अष्टकूट कहलाते हैं—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गण मैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिका ॥—मु० चि०

अर्थात्—(१) वर्ण, (२) वश्य, (३) तारा, (४) योनि, (५) ग्रह-मैत्री, (६) गण-मैत्री, (७) भकूट तथा, (८) नाड़ी, ये आठ अष्टकूट कहलाते हैं।

अल्पेनापि हि शुल्केन पिता कन्या ददाति य।
रौरवे बहुवर्षाणि पुरीषं मूत्रमश्नुते ॥ —आ० स्मृ०

१. वर्णविचार

राशि	वर्ण
४, ८, १२	ब्राह्मण
१, ५, ९	क्षत्रिय
२, ६, १०	वैश्य
३, ७, ११	शूद्र

अब वर्णगुण-चक्र पर ध्यान दें—

	वर			
वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्या — ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय या अभिन्न होने पर एक गुण मिलता है।

वश्य

वश्य	राशि
चतुष्पद	१, २, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध
मानव	३, ६, ७, धनु का पूर्वार्द्ध, ११
जलचर	४, मकर का उत्तरार्द्ध, १२
वनचर	५
कीट	

इनमें सर्वश्रेष्ठ मानव, फिर जलचर, फिर वनचर, फिर चतुष्पद एवं सबसे अधम कीट है।

इसी प्रकार अन्य अष्टकूटों के बारे में भी विचार करें। इनमें ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री) सबसे प्रमुख है—

वर्णवैर योनिवैर गणवैरं नृदूरकम्।
दुष्टकूट भवं सर्वं ग्रह मैत्रेण नश्यति ॥

—फलित नवरत्न संग्रह

अर्थात्—वर्णवैर, योनिवैर, गणवैर, दुष्टकूट आदि दोष तब नहीं लगता, जब कि ग्रह-मैत्री हो।

ग्रह आपस में कौन किसका शुभ है, कौन किस ग्रह का

मित्र है, और कौन-कौन ग्रह परस्पर न शत्रु हैं और न मित्र, इन्हें आप निम्नांकित तालिका से समझने का प्रयास करें।

ग्रह-मैत्रीचक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
शत्रु	बुध	मं०, गु०, शु०, श०,	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
सम	शनि शुक्र		बुध	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल

गण-विचार

वर-कन्या का एक ही गण हो तो विवाह उत्तम, देव मानव हो तो उत्तम, देव-राक्षस हो तो मध्यम एवं मानव-राक्षस हो तो अधम समझना चाहिए।

गण	नक्षत्र
देव गण—	अ०, श्ले०, म०, चि०, वि०, ज्ये०, मू०, ध० श०।
मनुष्य गण—	भ०, रो०, आ०, पूफा०, पूषा०, उफा०, उषा०।
राक्षस गण—	अ०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, श्र०, रे०।

ये गण मात्र विवाह हेतु ही वर-कन्या के नक्षत्रों से समझने चाहिए।' पर ग्रह-मित्रता मिल जाने पर कन्या के राक्षस गण का दोष नहीं व्यापता।

१. सद्भकूटं योनि शुद्धि ग्रह सख्यं गुणत्रयम्।
एष्वेव तम सद्भावे कन्या रक्षो गणा शुणा ॥

—ज्यो० नि०

राशि दोष[1]

(१) एक ही राशि (वर-कन्या की) सर्वोत्कृष्ट कहलाती है, पर वर-कन्या दोनों के नक्षत्र-चरण एक ही नहीं होने चाहिए।[1]

द्विर्द्वादश

(१) जब वर की राशि से कन्या की राशि बारहवीं या दूसरी हो तो 'द्विर्द्वादश' योग होता है, जो कि सर्वथा त्याज्य है।

(२) केवल सिंह कन्या राशि के दम्पति हों तो द्विर्द्वादश योग नहीं लगता, एवं शुभ होता है—

समं भं द्विर्द्वादशके द्वितीय।
सहितं श्रेष्ठ त्रिया युग्धरि॥

(३) वर की राशि से कन्या की राशि ग्यारहवीं या तीसरी हो तो श्रेष्ठ होती है, इसे "त्रिरेकादश" योग कहते हैं—

एकराशौ महाप्रीतिश्चतुर्थ दशमे सुखम्।
तृतीयेऽकादशे वित्तं सुप्रजा सम सप्तके॥ —ज्यो० नि०

चतुर्थ दशम

इसमें दोनों की राशियाँ परस्पर चतुर्थ-दशम होती हैं, जो कि शुभ हैं। पर कुछ विद्वानों के अनुसार तुला मकर, वृष सिंह, मेष-कर्क, मिथुन-मीन, धनु-कन्या, तथा कुम्भ वृश्चिक 'चतुर्थ दशम' दारिद्रय सूचक हैं।

नवम-पंचम

यदि वर राशि कन्या राशि से परस्पर नवम-पंचम हो तो सन्तान-हानि होती है।

षडष्टक

वर-कन्या की राशियाँ परस्पर छठे-आठवें हो तो षडष्टक-योग होता है, जो कि दुर्भाग्यसूचक है।

---

१. गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशि मैत्री यदा भवेत्॥
—वृहज्ज्योतिषसार
—मार्तण्डवल्लभ

२. एकराशौ शुभोद्वाह एकमांशे मृतिप्रदः। सु०—१५४

पर मतान्तर से निम्न षडाष्टक शुभ एवं अशुभ है—

शुभ	अशुभ
मेष-वृश्चिक	वृष-धनु
मिथुन-मकर	कर्क-कुम्भ
सिंह-मीन	कन्या-मेष
तुला-वृष	वृश्चिक-मिथुन
धनु-कर्क	मकर-सिंह
कुंभ-कन्या	मीन-तुला

सम सप्तक

दोनों वर-कन्या परस्पर यदि समसप्तक हों यानि पति की राशि से कन्या की राशि सातवीं हो तो वह समसप्तक कहलाती है जो कि सर्वश्रेष्ठ कहलाती है। पर कर्क-मकर तथा सिंह-कुंभ का समसप्तक विष के समान त्याग देना चाहिए।[1]

नाड़ी

आद्य नाड़ी—अ०, आ०, पुन०, उफा०, ह०, ज्ये०, मू०, श० पूभा०।

मध्य—भ०, मृ०, पु०, फा०, चि०, अनु०, पू०, षा०, ध०, उ०, भा०।

अन्त्य—कृ०, रो०, श्ले० म०, स्वा०, वि०, उ० षा०, श्र०, रे०।

(१) एक ही नाड़ी पति-पत्नी की हो तो वह अशुभ है।

(२) दोनों की आधी नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् विरोध, दोनों की मध्य नाड़ी हो तो विवाह-पश्चात् मृत्यु तथा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य-दुःख भोगना पड़ता है।

अपवाद

(१) नाड़ी-दोष में केवल मध्य नाड़ी एकता ही त्याज्य है।[1]

(२) यदि राशि एक हो पर नक्षत्रभेद हो, या नक्षत्र एक हो

---

१. मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत॥
—ज्योतिर्निबन्ध

निधर्न मध्यनाड्यांच दम्पत्यौर्नैव पार्श्वयो। —ज्योतिःप्रकाश

पर राशि भेद हो तो नाड़ी-दोष नहीं लगत.

(३) कृ० रो०, मृग०, आ०, पुष्य०, ज्ये०, श्र०, उ०, भा
और रेवती नक्षत्रों में से ही वर-वधू के नक्षत्र हों
नाड़ी-दोष नहीं लगता।

(४) क्षत्रियकुल के लिए नाड़ी-दोष देखना आवश्यक नहीं।

(५) यदि वर-कन्या की राशि का स्वामी बुध, गुरु या
में से कोई ग्रह हो तो नाड़ी-दोष नही लगता।

(६) नाड़ी-दोष होने पर महामृत्युञ्जय जप करने से
शान्त हो जाता है।[२]

(७) ब्राह्मणों को नाड़ी-दोष, क्षत्रियों को वर्ण-विचार, वैश्
को गण-विचार तथा शूद्रों को योनि-शुद्धि-विचार विशे
तथा विचारणीय है।[३]

गुण विचार

वर्ण अष्टकूट आदि की गणनानुसार कुल गुणों की सं
३६ होती है। वर-कन्या के गुणों या गणों की संख्या
से २० तक सामान्य, २१ से २८ तक उत्तम तथा २८ से ऊ
श्रेष्ठतम होता है। ज्योतिर्निबन्ध में लिखा है :

गुणं षाडशभिर्निन्द्य मध्यमा विंशतिस्तथा।
श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तुत्तमोत्तमाम् ॥

पर मेलापक में १८ गुणों से अधिक की प्राप्ति उचित एवं ग्रा
समझी गई है।[४]

---

१. रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्निपुष्य श्रवण पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते ॥
—ज्योतिश्चिन्तामणि

२. दोषानुपत्तये नाड्या मृत्युञ्जय जपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् कांचनादिना ॥
बृ० सा

३. नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥ —शीघ्र बो

४. एकैक वृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके ॥ —मुहूर्त गणप

मंगल विचार

वर-वधू मेलापक में मंगल विचार सर्वोपरि महत्व रखता है। यदि (वर या कन्या की) जन्मकुण्डली अथवा चन्द्रकुण्डली के लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल स्थित हो तो वह विनाशकारी होता है—

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तुं विनाशाय, भर्ता कन्या विनाशत् ॥
—मुहूर्त संग्रह

लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले महीसुतो वा शनि राहु केतवः।
व्ययाष्टतुर्ये प्रथमे कलत्रे कन्या वरं हन्ति वरश्च कन्याम् ॥

अपवाद

निम्न स्थितियाँ होने पर मंगल-दोष नहीं रहता—

(१) यदि १, ४, ७, ८, १२वें भाव में शनि हो तो उसका मंगल-दोष शान्त हो जाता है।[१]

(२) बलवान गुरु शुक्र-लग्न या सप्तम भाव में हो तो भौम-दोष नहीं रहता।

(३) शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत् ॥

यदि कन्या की कुण्डली में जहां मंगल हो, वर की कुण्डली में वहीं कोई प्रबल पापग्रह हो तो भौम-दोष नहीं रहता। इसी प्रकार वर से वधू के बारे में भी समझें।

(४) वक्री, नीच, अस्त, अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तब भी मंगल दोष नहीं रहता।

(५) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों, तो भौम-दोष नहीं रहता।

(६) यदि वर की कुण्डली में छठे स्थान में मंगल, सातवें भाव में राहु तथा आठवें भाव में शनि हो तो, कन्या की

१. यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा।
नवमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥ —मु० द० संग्रह

कुण्डली में मंगल दोष रहने पर भी उसका प्रभाव रंचमात्र भी दूषित नहीं होता।[1]

(७) वर कन्या दोनों की कुण्डलियों में मंगल-दोष हो तो दोनों में से किसी को मंगल-दोष नहीं रहता।[2]

(८) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ भाव में, या मकर राशि का सातवें या कर्क राशि का आठवें, या धनु राशि का मंगल बारहवें भाव में हो तो मंगल-दोष नहीं लगता।[3]

(९) निम्न योग होने पर भी मंगल दोष नहीं रहता।[4]

(क) दूसरे भाव में चन्द्र शुक्र हो।

(ख) मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो, या साथ में हो।

(ग) केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०) में राहु हो।

(घ) मंगल तथा राहु कहीं पर भी साथ में बैठे हों।

(१०) केन्द्र में चन्द्रमा या चन्द्र-मंगल युति हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता।

(११) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप-ग्रह हों, तब भी मंगल दोष नहीं लगता।

अतः मंगल विचार अत्यन्त सूक्ष्मता एवं सावधानीपूर्वक करना चाहिये।

विष कन्या

(१) २, ७, १२ तिथि हो, रवि, शनि या मंगलवार हो, तथा कृत्तिका, आश्लेषा या शतभिषा नक्षत्र हो, ऐसे योग में जन्म लेनेवाली कन्या विषकन्या कहलाती है।

---

१. षष्ठे च भवने भौमोराहुः सप्तम सम्भव।
अष्टमे च यदा सौरि तस्या भार्या न जीवति॥ —ज्योतिष सार

२. "कजे वा तादृशीद्वयो" —मुहूर्त गणपति

३. अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौम दोषो न विद्यते॥ —मु० पा०

४. न मंगलो चन्द्र भृगु द्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीव।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगल राहु योगी॥
—मुहूर्त दीपक

भद्रा तिथिर्यदाश्लेषा शतभिषा कृत्तिका तथा।
मंदार रविवारेषु विषकन्या प्रजायते॥ —ज्यो० नि०

(२) दो शुभ ग्रह लग्न में, एक पापग्रह दशम भाव में, तथा दो पापग्रह षष्ठभाव में हों तो विषकन्या कहलाती है।

(३) लग्न में एक क्रूर ग्रह व एक सौम्यग्रह हो।

परिहार— १. लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव का स्वामी शुभग्रह हो तो विषकन्या-दोष मिट जाता है।

२. सावित्र्यादि व्रतं कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये।
अश्वत्थाभिदि रुद्राह्य दद्यातां चिरजीवने॥

२५. विवाहे ग्रहाणं रेखाप्रद स्थान

नीचे विवाहरेखा साधन या विश्वा साधन दिया जा रहा है—"लग्न शुभं विवाहे स्याद् दशविंशोपकाधिकम्" के अनुसार बीस रेखा मिलनी शुभ कहलाती है—

रेखा प्रद स्थान

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु	श०	रा०	के०	ग्रह
३	२	१	१	१	१	३	३	३	स्थानानि
६	३	६	२	२	२	६	६	८	
८	११	११	३	३	४	८	८	११	
११			४	४	५	११	११		
			५	५	९				
			६	६	१०				
			९	९	११				
			१०	१०					
			११	११					
३।	५	१।	२।	३।	२	१॥	१॥	१॥	बलम्

२६. वाग्दान मुहूर्त

वर-कन्या विवाह से पूर्व वर के पिता तथा कन्या के पिता सगाई के लिए जा मिलते हैं, उसे 'वाग्दान' कहते हैं—

तिथि— २, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १४, १५ (शुक्ला)।

वार— चं०, बु० गु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०; चि०, स्वा०, अनु०, श्र० ध० रे० ।

२७. वर-तिलक-मुहूर्त

जब सगाई निश्चित हो जाती है, तब कन्या पक्ष के लोग वर के तिलक करने को जाते हैं, तथा भेट देते हैं—

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, पूर्वा० ३, उत्तरा ३ ।

भद्रा, गण्डान्त, गुरु-शुक्र अस्त, निर्बल चन्द्र-त्याज्य है ।

२८. विवाह-दोष

विवाह मुहूर्त निकालने के लिए निम्नलिखित इक्कीस दोष विचारणीय हैं—

१. उदयास्त	२. पंचाग शुद्धि	३. मासान्त
४. षड् वर्ग	५. अष्टमस्थ भौम	६. त्रिविधगण्डान्त
७. षष्ठभावस्थ शुक्र	८. कर्तरी दोष	९. चंद्र दोष
१०. विष घटी	११. मुहूर्त दोष	१२. वार दोष
१३. ग्रहण	१४. विद्ध ग्रह	१५. पाप नक्षत्र
१६. नवांश दोष	१७. पातक	१८. वैधृति
१९. लत्ता	२०. वैधृत	२१. व्यतिपात

२९. विवाह योग-तथ्य

नीचे विवाह-सम्बन्धी मुहूर्त स्पष्ट करने से पूर्व जानकारी स्पष्ट की जा रही है—

१. भाई के विवाह के छः महीनों के भीतर बहिन या बहिन के विवाह के छः महीनों के भीतर भाई का विवाह निषेध है। पर संवत् बदल जाय, और इस बीच छः मास से भी कम समय हुआ हो तो भी विवाह हो सकता है।[1]

२. दो भाई या दो बहिनों का एक-साथ विवाह भी शास्त्र के विरुद्ध है।[2] पर कुछ विद्वानों के अनुसार दो अलग-

१. न सहज सुतोद्वाहोऽब्धार्धे शुभे । —मु० चि०

२. एक मातृजयोरेक वत्सरे पुरुष स्त्रियो ।
न समान क्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधीयते ॥ —मु० सं० द०

अलग घरों में मण्डप बनाकर सगे भाई-बहिनों या भाइयों का विवाह किया जा सकता है।

वाग्दान के पश्चात्, गत तीन पीढ़ी तक के यदि किसी सदस्य की मृत्यु हो जाय, तो एक मास के पश्चात् विवाह-शास्त्रसम्मत है।[1] यदि कन्या या वर के माता-पिता, बड़े भाई या बड़ी बहिन की मृत्यु हो जाय, तो एक वर्ष के बाद विवाह उचित है।[2] 'नारद संहिता' के अनुसार पिता की मृत्यु के बाद १ वर्ष, माता की मृत्यु के बाद ६ मास, स्त्री की मृत्यु के बाद तीन मास, पुत्र की मृत्यु के बाद दो मास, सम्बन्धी की मृत्यु के बाद एक महीना छोड़कर विवाह किया जा सकता है।

दक्षिणायण, देवशयन काल, क्षयमास अधिक मास, गुरु-शुक्रास्त, क्षय वृद्धि तिथि, सिंह मकरस्थ गुरु, श्राद्ध, व्यतिपात आदि काल में विवाह-मुहूर्त निषेध है।

३०. गोधूलि वेला

'मुहूर्त चिन्तामणि' के अनुसार गोधूलि-वेला की महत्ता सर्वोपरि है, चाहे नक्षत्र, तिथि, करण, वार, नवांश, योग अष्टमस्थान दोष या जामित्र-दोष भी हो, पर गोधूलि वेला में इनका दोष खत्म हो जाता है, लग्नशुद्धि भी आवश्यक नहीं है, और न मुहूर्त शुद्धि की—

नास्या मृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता,
नो वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा ।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥

गोधूली वेला कब मानी जाय, इसके लिए उल्लेख है—

१. वध्वा वरस्यापि कुलेत्रि पुरुषं नाशं व्रजेत्कश्चन निश्चयोत्तरम्
मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शान्त्याथवा सूतक निर्गमेऽपरे ॥
—मुहूर्त चिन्तामणि

२. वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः यस्य चिन्मृतिः ।
तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् ॥
— निर्णय सिन्धु

यदा नास्तंगतो भानुर्गोधूल्यां पूरितं नभः ।
सर्वं मंगल कार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥
वर्धास्तात्पूर्वमप्यूर्ध्वं घटिकार्धन्तु गोरजः ।
सःकालो मंगले श्रेयान् विवाहादौ शुभप्रदः ॥
निदाघे त्वर्धबिम्बेऽर्के पिण्डीभूते हिमागमे ।
मेघकाले तु पूर्णस्ते प्रोक्तं गोधूलिकं शुभम् ॥

अर्थात् सूर्यास्त न हुआ हो, तथा लौटती हुई गायों के खुर से उड़ी रज से गगन आच्छादित हो रहा हो,[1] वह मंगलमय गोधूलि वेला है। सूर्य के बिम्ब के आधे भाग को जब क्षितिज छिपा लेता है, उससे पूर्व के १२ मिनट गोधूलि वेला कही जाती है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त पूर्व १२ मिनट और सूर्यास्त के बाद के १२ मिनट इस प्रकार इन २४ मिनटों को गोधूलि-वेला कहते हैं।

वर्जित

१. जब गोधूलि लग्न से ८वें मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में कोई ग्रह हो, और १, ६ या ८वें चन्द्र हो तो वह गोधूलि समय दोषयुक्त होता है।[1]

२. गोधूलि लग्न से १,६ ८वें चन्द्र होने से कन्या के लिए तथा, १,७,८ वें मंगल होने से वर के लिए प्राणघातक होता है।[2]

३. यदि चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में से कोई गोधूलि लग्न से ६, ८वें हो अथवा लग्न में चंद्र हो तो गोधूलि-लग्न वर्ज्य है।[3]

४. कुलिक, क्रान्ति साम्य या १,६, ८वें चन्द्र हो गोधूलि-लग्न दूषित हो जाता है।[4]

---

१. अष्टमे जीव भौमौ च बुधश्च भार्गवोष्टमे ।
लग्ने षष्टाष्टगश्चन्द्रो गोधूली नाशकस्तथा ॥
२. षष्टेष्टमे मूर्तिगते शशांके, गोधूलिके मृत्युमुपैति कन्या ।
कुजेष्टमे मूर्तिगतेऽथवास्ते वरस्य नाशं प्रवदन्ति गर्गाः ॥
३. षष्ठाष्टमे चन्द्रज चन्द्र जीवे क्षोणीसुते वा भृगुनन्दने वा ।
मूर्तौ च चन्द्रे नियमेन मृत्युर्गो लिकं स्यादित वर्जनीयम् ॥
४. कुलिकं क्रान्ति साम्यं च लग्ने षष्टाष्टमे शशि ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्य पंच दोषैश्च दूषितः ॥

५. पंचम भाव या नवमभाव में शनि हो।

६. शनिवार की गोधूलि-वेला सूर्यास्त के बाद ही शुभ मानी है।

७. गुरुवार की सूर्यास्त के बाद की गोधूलि-वेला त्याज्य है।

८. सूर्योदयकालीन लग्न से सातवाँ लग्न गोधूलि-लग्न कहलाता है।

३१. पुनर्विवाह मुहूर्त

मास– ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन, वैशाख।
तिथि –२,३, ५, ७, ८, १०, १२, १३ (शुक्लपक्ष)।
वार –सू०, बु० शु०।
नक्षत्र-उ० कृ०, आ०, पुन०, पु०, श्ले०, पूर्वा० ३, चि०, रे०।

टिप्पणी

निम्न स्तर की स्त्रियाँ पति की मृत्यु के बाद दूसरा पति चुन लेती हैं, तथा उसे विवाह कर लेती है, इसे पुनर्विवाह कहते हैं।

गुरु, शुक्रास्त, तथा क्षीण चन्द्रमा त्याज्य करे।

३२. विवाह मुहूर्त

मास – वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, पौष, माघ, फाल्गुन।
तिथि –१ (कृ) २,३,४, ५,६,७, ८, ९,१०, १२, १४, (शु)।
वार– सभी वार।
नक्षत्र- रो०, मृ०, म०, उ० ३, ह०, स्वा०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

गुरु, शुक्रास्त, सिंहस्थ गुरु, भद्रा, चन्द्रक्षय वर्जित है।

३३. वैदिका-मुहूर्त

तिथि– २, ३, ४, ५,६,७, ८,९, १०, ११, २१,११, १४, १५ (शु०)
वार– सभी।
नक्षत्र – कृ०, रो०, मृ०, आ०, पु०, पूर्वा० ३, श्र०, अनु०, ध०, रे०।

टिप्पणी

विवाह में यज्ञकार्य-हेतु वेदी निर्माण एक आवश्यक कृत्य है, यह ४ हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी एक हाथ ऊँची और क्रमशः पूर्व की ओर ढालू हो। वेदी के चारों ओर ४ स्तम्भ (या खुंटियाँ) रोपे जाते हैं। इन स्तंभों में प्रथम स्तंभ निम्न सूर्य राशियों में संबंधित दिशा में रोपे।[1]

सूर्य राशि	दिशा
२, ३, ४	अग्निकोण
५, ६, ७	ईशान कोण
८, ९, १०	वायव्य कोण
११, १२, १	नैऋत्यकोण

३४. वधूप्रवेश-मुहूर्त

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष फाल्गुन।
तिथि—२, ३, ४, ५, ६, ८, १०, ११, १३, १५ (शुक्ल)।
वार—चं०, बु०, गु० शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पु०, उत्तरा ३, ह० चि०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श्र०, ध०, रे०।
लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

विवाह के बाद प्रथम बार पतिगृह जाने को वधूप्रवेश या वधू-आगमन कहा जाता है। विवाह तिथि, भद्रा, व्यतिपात, गुरु शुक्रास्त, क्षीण चन्द्र वर्जित है।

विषम दिनों में, विषम मासों में या विषम वर्षों में वधू-प्रवेश शुभ है।

सर्वथा नवीन गृह में वधूप्रवेश त्याज्य है।

३५. प्रथम पाक कर्म मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ६, ८, ९, १२, १३, १५ (शु)।
वार—चं०, बु०, गु०, शु० श०,।

१. मीन सरोवर सिंह, घर वृषे वदी थाय।
तीन तीन मास गमन करे सर्प करे सिणगार॥

नक्षत्र—कृ०, रो०, मृ०, पू० ३, वि० अनु०, श्र०, ध०, रे०।
लग्न—२, ५, ८, १०, ११।

टिप्पणी

ससुराल में आने के बाद वधू को प्रथम बार पाक कार्य दिया जाना ही उक्त-मुहूर्त कहलाता है।

३६. प्रथम युवति संभोग मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ९, १३, १५ (शु)।
वार—चं० बु०, गु० शु० श०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।
लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११
चन्द्र—प्रबल हो।

३७. वस्त्र-निर्माण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५।
वार—सू०, चं०, मं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—मृ०, रो०, उ० ३, चि०, अ०, रे०।[1]

टिप्पणी

हाथ करघा, मिल, कॉटन मिल छपाई आदि वस्त्र सज्जा या वस्त्र निर्माण हेतु उपर्युक्त मुहूर्त का उपयोग करना चाहिए।

३८. वस्त्र धोने की दुकान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १३, (दोनों पक्ष)
वार—चं०, म०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०।

टिप्पणी

धोबी की दुकान का मुहूर्त भी यह है।

३९. चमड़े का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ९, १०, १२, १५ (दोनों पक्ष)।
वार—सू०, श०।

१. रेवती रोहिणी चित्रानुराधामृगमोत्तरे।
शनि दिवा कुविन्दानां तन्तुभिः पट्ट साधनम्॥ —मुहूर्तगणपति

नक्षत्र—कृ०, मृ०, श्ले०, म०, पूर्वा ३, चि०, वि०, अनु०, ज्ये०, रे० ।

टप्पणी

नई जूते की दुकान खोलना, चमड़ा रंगना, चमड़े से संबंधित वस्तुओं की दुकान खोलना या नये जूते पहिनने से सम्बन्धित ।

४०. सुगन्धित द्रव्य मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ दोनों पक्ष ।

संवतारंभ एवं दीपावलि भी ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, रो० पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

टिप्पणी

इत्र, चन्दन, अगर फूल आदि की दुकान से संबंधित ।

४१. भूषण-रत्न-मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४ ।

वार—बु० गु० शु० ।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

टिप्पणी

सोने-चाँदी की दुकान, जवाहरात, बने-बनाये आभूषण बेचना आदि की दुकानों के लिए ।

४२. नौकरी करने का मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ ।

वार—बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पुष्य, चि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

१०, ११वें० सू०, मं०, शुभ है, लग्न से १, २, ४, ७, १० ११वें भाव में शुभग्रह होना आवश्यक है ।

सूर्य ५, १४, २३वें अंश पर हो तब नृपबाण कहलाता है अतः नृपबाण का भी त्याग करना चाहिए ।

४३. सवारी (वाहन) लाने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ०), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५(शु०)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, ध०, शत० रे० ।

लग्न- २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि-लग्न ।

टिप्पणी

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गणना करते हुए

प्रथम ३	नक्षत्रों में	—नेष्ट
४–६	"	"
७–९	"	"
१०–१२	"	श्रेष्ठ
१३–१५	"	"
१६–१८	"	नेष्ट
१९–२१	"	"
२२–२४	"	"
२५–२७	"	श्रेष्ठ ।

४४. नौकर रखने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ०), २, ३, ५, ७, १०, १३ (शु०) ।

वार—सू०, मं०, बु०, शु०, श० ।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

नौकर के जन्म-नक्षत्र से मालिक के जन्म-नक्षत्र तक गिने यदि ।

३ नक्षत्रों तक		अर्थलाभ
४–६	"	विनाश
७–१२	"	धनधान्य-सुख
१३–१८	"	दारिद्र्य

१९—२०	,,	प्राणभय
२१—२४	,,	शुभ
२५—२६	,,	पीड़ा
२७	,,	धनलाभ
२८	,,	नाश ।

४५. नौकाचालन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३ (शुक्ल)।
वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।
नक्षत्र—अ०, मृ०, पूफा ३, ह०, अनु०, श्र०, ध० ।
लग्न—कर्क, मकर ।

टिप्पणी

नौका की षोडषोपचार पूजा कर स्वस्तिवाचन के साथ उसे जल में उतारना चाहिए ।

४६. शस्त्र-निर्माण-मुहूर्त

तिति—१ (कृ) २, ५, ७, १०, १२, १३ (शु०) ।
कार—सू० मं० शु० ।
नक्षत्र—भ०, कृ०, आ०, श्ले०, पुन०, पु०, पूर्वा ३, ज्ये०, मू०, श्र०, रे० ।

टिप्पणी

शस्त्र निर्माण करना, या बने-बनाये शस्त्र बेचने की दुकान हेतु ।

४७. शत्रु-ताड़न मुहूर्त

तिथि—३, ४, ९, १३, १४ ।
वार—सू०, मं०, श० ।
नक्षत्र—भ०, आद्रा, श्ले०, म०, पू० ३, ज्ये०, मू० ।

टिप्पणी

लग्न १, ५, ८, १०, ११, शुभ है। लग्न में क्रूर ग्रह जरूरी है। शत्रु पर मुकदमा चलानें या उसे पीटने के लिए उपर्युक्त मुहूर्त श्रेयस्कर है।

४८. मादक वस्तु मुहूर्त

तिथि— २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२ (शु०) १५ ।
वार— चं०, बु० गु०, शु०, श० ।
नक्षत्र— भ०, आ०, श्ले०, ज्ये०, मू०, रे० ।

टिप्पणी

शराब, गांजा, भांग, तम्बाकू आदि की दुकान खोलने के लिए।

४९. वाद्य-प्रयोग मुहूर्त

तिथि— २, ३, ५, ८, १०, १३ (शु०) ।
वार— सू०, चं०, बु० गु० शु० ।
नक्षत्र— अ०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र० ध० रे०।

टिप्पणी

तबला, सितार, सारंगी, ग्रामोफ़ोन, रेडियो आदि वाद्ययंत्रों की दुकान खोलने के लिए।

५०. शत्रु-संधि (राजीनामा) मुहूर्त

तिथि— दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ८, १०, १२, १३ ।
वार —चं०, बु०, गु०, शु० ।
नक्षत्र— पुष्य, मघा, पू०, फा०, अनु० ।

टिप्पणी

लग्न शुभ हो।

५१. पशु क्रय-विक्रय मुहूर्त

तिथि— १ (कृ) २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १३ (शु०)।
वार— सू०, चं०, बु०, गु०, शु०, श० ।
नक्षत्र — अ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, ज्ये०, ध०, रे० ।

५२. पक्षीपालन मुहूर्त

तिथि— २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२ (दोनों पक्ष) ।
वार— सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र— अ०, रो०, मृ०, आर्द्रा०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, रे० ।

५३. मन्त्रसाधन मुहूर्त

तिथि—४, ६, ८, ९, ११, १४, (दोनों पक्ष की) ।

वार—सू०, चं०, बु० गु०, शु० ।

नक्षत्र— भ०, आ०, म०, मू० ।

लग्न—५/११ हो ।

टिप्पणी

संक्रान्ति, दीपमालिका, होलिका, दुर्गाष्टमी, ग्रहण का दिन नवरात्रि भी शुभ है ।[1]

५४. नृपप्रयाण मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शु०) ।

वार—गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्वि०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, अभि०, श्र०, ध०, रे० ।

टिप्पणी

राजाओं के लिए या रानी जहाँ भी जावे, विशेषतः यात्रा या शुभ कार्य के लिए जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देख लें ।

प्रतिपदा, द्वितीया, रिक्ता तिथि, त्रिपुष्कर, चन्द्रदोष में यात्रा निषेध है ।

५५. नगर प्रवेश मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२ ।

वार—सू०, श० ।

नक्षत्र—कृ०, वि०, उषा० पूभा० ।

५६. मल्ल क्रिया (कसरत) मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३, १५ (दोनों पक्ष)

वार—सू०, चं० गु०, शु० ।

नक्षत्र—भ०, श्ले०, म०, पू० ३, ज्ये०, मू० ।

लग्न—३, ६, ७, ८, ११ ।

१. मघार्द्रा भरणी मूले मृगेऽर्गे सबुधे घटे ।
शुद्धाष्टमे भृगौ तुर्ये वीर बेताल साधनम् ॥

—मुहूर्त गणपति

सु०—१५४

टिप्पणी

सूर्य मंगल केन्द्र में हों तो शुभ है ।

५७. ब्याज लेन-देन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३ (दोनों पक्ष) ।

वार— सू०, चं०, बु०, गु०, शु० श० ।

नक्षत्र— भ०, कृ०, श्ले०, पू० ३, वि० ।

लग्न— २, ५, ८ ।

टिप्पणी

केन्द्र, दूसरे भाव तथा त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह शुभ है ।

५८. भूमि के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

तिथि—२, ५, ६, १०, ११, १५ (दोनों पक्ष) ।

वार—गु०, शु० ।

नक्षत्र—मृ०, पुन०, श्ले०, म०, वि०, अनु०, मू०, रे० ।

लग्न—२, ५, ८ ।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह होना शुभ है ।

५९. वाणिज्य कर्म प्रारंभ का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष) ।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०, श० ।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, पू०, भा०, रे० ।

टिप्पणी

लग्न में चन्द्र-शुक्र हो । ८वें १२वें भाव में पापग्रह न हो । २, १० ११वें भाव में शुभग्रह हो ।

नामराशि से चन्द्र प्रबल हो ।

भू रुदन दिन को यह मुहूर्त वर्जित है ।[1]

१. मासान्ते दिन संक्रान्तौ वर्षान्ते च हुताशनी ।
अमायां भौमवारे च रोदति पंचदिनानि भूः ॥

६०. होटल खोलने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।

वार—सू०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, स्वा०, वि०, रे०।

निर्बल चन्द्र, वैधृति, ग्रहण, व्यतिपात वर्जित है।

६१. हल चलाने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, ये०, मू०, श्र०, ध०, रे।

टिप्पणी

लग्न २, ३, ६, ६, १२ हो। पापग्रह निर्बल हो। चन्द्र-शुक्र बली हों तो शुभ है।

भू-रजस्वला दिन में वर्जित है।[1]

भू-शयनकाल भी निषेध है।[2]

६२. बीज बोने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, (दोनों पक्ष)

वार—सू०, चं०, बु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

बीज बोने के लिए सूर्य नक्षत्र से ३ नक्षत्र तक शुभ उसके बाद १६ नक्षत्र तक अशुभ एवं बाद के ८ नक्षत्र तक शुभ माना गया है।

६३. सिंचाई मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, चि०, स्वा०, वि०,

१. संक्रान्ति से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वाँ दिन।

२. सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९, २६वाँ चन्द्रर्क्ष।

अनु०, पू०, भा०, रे०।

६४. खलिहान का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि० स्वा०, वि०, अनु०, रे।[1]

टिप्पणी

भू-रुदन, भू-हास्य, एवं भू-रजस्वला दिन वर्जित हैं।

६५. अनाज काटने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, भ०, कृ०, रो०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, श्ले०, म०, पू० ३, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, ज्ये०, मू०, श्र०, ध०, रे०।

६६. चूड़ी-धारण मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।

वार—सू०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्त० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे०।

चूड़ी चक्र

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनो,

प्रथम ३ नक्षत्र तक— नेष्ट

४	५	नेष्ट
६	९	श्रेष्ठ
१०	११	नेष्ट
१२	१८	श्रेष्ठ
१९	२०	नेष्ट
२१	—	श्रेष्ठ
२२	२४	श्रेष्ठ
२५	२७	नेष्ट

१. पूर्वभाद्रपदा मूलं रोहिण्युत्तरफल्गुनी।
विशाखा वारुणं चैव धान्यानां रोपणे वराः॥ —राज मार्तण्ड

टिप्पणी

देवशयन, गुरु-शुक्रास्त, धनु मीन संक्रान्ति आदि वर्जित हैं।

प्रथम बार चूड़ा पहनने का मुहूर्त भी यही है।

६७. बंटवारा करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, ध०, श०, रे०।

लग्न—शुभ। केन्द्र में शुभ ग्रह हो।

६८. व्रतोद्यापन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु० श्र०, ध०, रे०।

चन्द्र बलवान् हो। गुरु शुक्रोदय हो।[1]

टिप्पणी

एकादशी, पूर्णिमा, या भागवत अथवा किसी भी प्रकार के व्रतोद्यापन हेतु।

६९. यज्ञ-अनुष्ठानादि मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १०, १५, (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, रे०।

टिप्पणी

भू-शयन, भू-रजस्वला, भू-हास्य एव भू-रुदन वर्जित है।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२वां हो। दशम भाव में सूर्य, चतुर्थ भाव में चंद्र एव लग्न में गुरु शुभ है।

---

१. नास्ति स्त्रीनां पृथग् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्।
भर्तृ शुश्रुषयैवैता लोकानिष्टान् व्रजान्त हि॥ — स्कन्दपुराण

गुरु शुक्र प्रबल मार्गी व उदय हो।

यजमान का चंद्र प्रबल व शुभ हो।

७०. यंत्र-तंत्र-प्रयोग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, उ० फा०, ह०, चि०, श्र०।

टिप्पणी—चन्द्रबल प्रबल हो।

प्रीति, सिद्धि, साध्य, शुभ, शोभन, आयुष्मान् योगों में शुभ है।[1] —व्रत परिचय

७१. ऑपरेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५ (शुभ)।

वार—सू०, मं०, गु०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श्र०, श।

टिप्पणी

४, १४ तिथियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं।

७२. रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

तिथि—४, ९, १४।

वार—सू०, मं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, भ०, कृ०, मृ०, आ०, पु०, पू० ३, ह०, चि०, वि०, अनु०, मू०, श्र०, रे०।

लग्न—१, ४, ७, १०।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह शुभ है। भद्रा वैधृति व्यतिपात शुभ।

७३. दीक्षा मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्ल पक्ष), २ ३, ५ (कृष्ण पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,

हस्त मैत्र्य मृग पुष्यश्चुत्तरा।
अदिव पौष्ण शुभ योग सौख्यदा॥

स्वा०, वि०, अनु०, मू०, श०, रे० ।

टिप्पणी

तेरह तिथियों का पक्ष क्षयमास वर्जित है ।

वैशाख, श्रवण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष माघ, फाल्गुन शुभ है।

२, ३, ४, ५, ७ ६, १२ लग्न शुभ है ।

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो। पापग्रह वर्जित है ।

७४. गोद लेने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष) ।

वार— सू०, मं०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, ध० ।

टिप्पणी

बालक व गोद लेनेवाले व्यक्ति दोनों के चन्द्र शुभ । प्रबल हों ।

७५. संन्यासधारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, १०, १२ (दोनो पक्ष)

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—रो० उत्तरा ३ ।

टिप्पणी—

६ठे तथा १२वें भाव में शुक्र हों तो शुभ है। पापग्रह बलहीन हो ।

विद्वानों के अनुसार ३, ६, ११वें शनि, ६, १२वें शुक्र तथा गुरु केन्द्र में हो तो अधिक उत्तम है ।

७६. राज्याभिषेक मुहूर्त

मास—चैत्र के अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के मास ।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, (शुक्ल)[1] (कृ) ।

वार—सू०, बु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पु० उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०,

१. मृतराज न कालस्य नियमोऽत्र विधीयते ।
नृपाभिषेकः कर्तव्यो देवज्ञेन पुरोधसा ॥

—दैवज्ञ मनोहर

ज्ये०, श्र०, रे० ।

लग्न—स्थिर या २, ३, ५, ७, ८ राशि का ।

टिप्पणी

राजा की मृत्यु के बाद बिना मुहूर्त के भी तत्काल राजगद्दी ग्रहण कर लेनी चाहिए, तथा राज्यकार्य सम्पादन करना चाहिए। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर राज्याभिषेक करा ले ।

जिसका राज्याभिषेक हो रहा हो उसकी जन्म-लग्न-राशि से भी ३, ६, १०, ११वाँ लग्न शुभ है। पापग्रह ३, ६, ११वें तथा शुभ ग्रह अन्य स्थानों विशेषतः केन्द्र त्रिकोण में हो ।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्य ३, ६, ९, ११, चन्द्र १, ६, ८, १२वें स्थान के अतिरिक्त स्थान में होना आवश्यक है ।

मंगल ६ठे, गुरु १, ४, ५, ९, ११वें, शुक्र ५, १०वें तथा शनि ३, ११, १२वें हों तो राजा कीर्तिवान् चिरायु एवं राजलक्ष्मीयुत यशस्वी हो ।

७७. खड्ग धारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, (शु) ।

वार—सू०, मं०, शु० श० ।

नक्षत्र—पु०, पुन०, पू० फा०, उ० ३, ह० चि०, स्वा०, ज्ये०, रे० ।

लग्न— १, २, ५, ७, १०, ११ राशि से ।

७८. संधि-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ८, १२, १३ (शु) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—पु०, म०, पू० फा०, अनु० ।

लग्न—शुभ अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट ।

टिप्पणी

भद्रा कुयोग व क्षीण चन्द्र वर्जित है ।

मुकदमे में वादी-प्रतिवादी के बीच व्यावहारिक तौर पर मनमुटाव के बाद समझौता संधि ही कहलाती है ।

७९. लघु उद्योग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, (शुक्ल)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पु० पुष्य०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, पू० भा०, रे०।

लग्न—कुंभ लग्न के अतिरिक्त कोई भी लग्न हो। केन्द्र त्रिकोण शुभ ग्रहों से युक्त हो।

टिप्पणी

छोटे पैमाने पर व्यापार या कुटीर उद्योग आदि के लिए।

८०. बृहद व्यापार मुहूर्त

तिथि—२, ५, ७, १२, १३, (शुक्ल) १, (कृ)

वार—बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०।

व्यापार प्रमुख की चन्द्र शुद्धि भी देख लेनी चाहिए, तथा दशा अन्तर्दशा का भी विचार कर लेना चाहिए।

३१. बहीखाता प्रारंभ मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल),

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—१, ३, ४, ६, ७, ९, १० राशि लग्न।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह न हो, तथा लग्न पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हो।

विजया दशमी, दीपावलि, अक्षय तृतीया, नवरात्रस्थापन दिवस आदि दिन बिना मुहूर्त के भी श्रेष्ठ हैं।

चतुर्मास एवं गुरु शुक्रास्त पूर्णतः वर्जित है।

८२. संपत्ति विभाजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (शु०)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु० श्र०, ध०, रे०।

लग्न—२, ३, ४, ७, ९, ११ राशि।

८३. आवेदन-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, १०, १३ (शुक्ल) १ (कृ)।

वार—सू०, चं०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, श्र०, ध०, श०, रे०।

टिप्पणी

किसी पद के लिए, कार्यसिद्धि हेतु या किसी व्यावहारिक कार्य के लिए उपयुक्त मुहूर्त पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यह ध्यान रहे कि उस दिन प्रार्थी का चन्द्र बलवान हो, शुभ हो तथा लग्नेश भी सशक्त हो।

८४. नौकरी प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५ (शु) १ (कृ)।

वार—चं, गु०, शु०, श०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, श्र०, रे।

टिप्पणी

लग्नेश प्रबल हो, तथा लग्न में चन्द्र या शुक्र हो। शनि ६, ८, ११ वें हो। गुरु सप्तम में रहे तो श्रेष्ठ होगा।

नृप बाण का परित्याग करें।

८५. कोल्हू प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ९, १२, १३ दोनों पक्ष।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

तेल की घाणी, या सुगंधित तेल बनाने के लिए भी उपयोगी।

८६. नाई की दुकान-मुहूर्त
तिथि—२, ३, ४, तिथि को छोड़कर कोई भी तिथि।
वार—चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अश्वि०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, ध०, रे०।

८७. सुनार की दुकान मुहूर्त
तिथि—२, ३, ४, ११ तिथि छोड़ कर कोई भी तिथि।
वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अश्वि०, कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, रे०।
लग्न—स्थिर।

८८. लुहार की दुकान मुहूर्त
तिथि—८, ११, छोड़कर कोई भी तिथि।
वार—मं०, शु०, श०।
नक्षत्र—भ०, कृ०, रो०, आ०, चि०, स्वा०, अनु०, रे०।
लग्न—२, ५, ७, ८, ११ राशि।

८९. काष्ठ की दुकान का मुहूर्त
तिथि—४, ६, ७, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।
वार—सू०, चं०, बु०, गु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, चि०, अनु०, ज्ये०, श्र०, ध०, श०, रे०।
लग्न—स्थिर।

९०. मिठाई की दुकान का मुहूर्त
तिथि—४, ७, ८, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।
वार—सूर्यवार छोड़कर।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, रे०।

९१. चमड़े (जूते) की दुकान का मुहूर्त
तिथि—२, ३, ४, ७, ८, १२, १३, (दोनों पक्ष)।
वार—बुधवार त्याज्य।
नक्षत्र—कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—स्थिर।

९२. गुप्तचर कार्य मुहूर्त
तिथि—२, ३, ४, ५, ७, १०, १२ दोनों पक्ष।
वार—मं०, श०।
नक्षत्र—भ०, कृ०, आ०, श्ले०, म०, पूर्वा ३, ज्ये०, वि०।

९३. तबादले के बाद ड्यूटी ज्वाइन मुहूर्त
तिथि—२, ३, १०, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।
वार—सू०, चं०, बु०, छोड़कर।
नक्षत्र—अश्वि०, मघा, मूल, ज्येष्ठा, शत०, छोड़कर।
लग्न—स्थिर।
टिप्पणी—चन्द्र प्रबल हो।

९४. प्रकाशन खोलने का मुहूर्त
तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।
वार—बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अश्विनी, भ०, कृ०, रो०, वि०, अनु० श्र०, ध०, रे०।
लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

गुरु-शुक्रास्त न हो। चन्द्र शुद्ध प्रबल एवं अनुकूल हो। पुस्तक विक्रेता, पुस्तक प्रकाशन, छापाखाना लगाना, अखबार निकालना, बुक स्टाल आदि के लिए उपयोगी।

९५. चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त
तिथि—२, ३, ५, ९, १०, १२, १५ शुक्ल पक्ष।
वार—चं०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, रे०।
लग्न—चर लग्न।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, तथा ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों। लग्नेश एवं चन्द्र प्रबल हो, तथा दोनों को पापग्रह न देख रहा हो।

चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश बली हो, या चतुर्थेश लग्नेश का संबंध हो।

९६. संसद् में जाने का मुहूर्त

टिप्पणी

संसद में जाने के लिए "चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त" ही योग्य है, पर लग्न स्थिर होना चाहिए, तथा लग्नेश प्रबल होना चाहिए।

९७. मन्त्रि पद पर शपथ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।
वार—मं०, शु०, बृ०, श०।
नक्षत्र—मृ०, आ०, म०, चि०, अनु०, मू०, उ० ३, ध०, श०।
लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

लग्न प्रबल हो। लग्नेश, चन्द्र, तथा सूर्य शुभ भावों में हों। चतुर्थेश बली हो, तथा वैधृत, व्यतिपात भद्रा आदि का त्याग हो।

९८. बाग लगाने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १५ दोनों पक्ष।
वार—सू०, बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, अनु० श०, रे०।

टिप्पणी

लग्न में जलचर राशि हो। गुरु-शुक्रास्त न हो, तथा भू-रजस्वला, भू-रुदन, भू-हास्य, भू-शयन का त्याग करें।

९९. फिल्म प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, ९, १२ (शुक्ल पक्ष), १५ (कृ)।
वार—बु०, गु०, शु०। शुक्रवार विशेष।
नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वा० ३, भरणी।
लग्न—चर राशि।

टिप्पणी

लग्नेश, चन्द्र एवं शुक्र ग्रह प्रबल हों। शुक्र यदि लग्न या चतुर्थ में हो तो विशेष शुभ। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह। लग्न पर पापग्रहों की दृष्टि न हो।

१००. फिल्म प्रदर्शन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १२, १५ (शु०)
वार—बु०, गु०, शु०।
नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वा ३, भरणी, रेवती।
लग्न—स्थिर।

१०१. भवन निर्माण मुहूर्त[1]

मास—वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन।[2] मास का चयन द्वारमुख के अनुसार करना आवश्यक है। पूर्व, पश्चिम द्वारमुख हो तो श्रावण, भाद्रपद, माघ, फाल्गुन। उत्तर-दक्षिण द्वारमुख हो तो वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष।

पक्ष—भवन-निर्माण मुहूर्त में शुक्ल पक्ष ही ग्राह्य है।[3]
तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल पक्ष)[4]
कुछ विद्वानों ने ५, ६, १०, ११ तिथियाँ वर्ज्य मानी हैं।
अर्थनाशो भवेत्षष्ठ्यामेकादश्यां विघमेनम्।
पंचम्यां चौरभीतिः स्याद दशम्यान्तु नृपाद भयम्।
पौर्णिमास्यां चार्थनाशो भार्यानाशस्तथैव च॥ ज्यो० सा० सं०।

त्याज्य तिथियाँ

द्वार दि ा	त्याज्य तिथियाँ
पूर्व दिशा	१५, कृष्ण १ से ९ तक
पश्चिम	३०, शुक्ल १ से ९ तक
उत्तर	कृष्ण ९,१०,११,१२,१३,१४
दक्षिण	शुक्ल ९, १०,११,१२,१३,१४

---

१. गृहस्थस्य क्रियाः सर्वा न सिद्धयन्ति गृहं बिना।
परगेहे कृताः सर्वाः श्रोतः स्मार्तक्रियाः शुभाः॥
निष्फलाः स्युर्ततस्तासां भूमीशः फलमश्नुते॥ —भविष्यपुराण

२. सौम्याः फाल्गुन वैशाख माघ श्रावण कार्तिकाः।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणं पुत्रपौत्रधनप्रदाः॥ —नारद पुराण

३. शुक्लपक्षे भवेत्सौख्य कृष्णे तस्करतो भयम्॥

४. द्वितीया पंचमी मुख्यास्तृतीय षष्ठिका तथा।
सप्तमी दशमी चैव द्वादश्यैकादशी तथा॥ —गृ० मा०

मासशून्य पक्ष, गलग्रह तिथियों का भी त्याग जरूरी है।

वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।[1]

नक्षत्र—रो०, मृग० पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, धृ०, श० रे०।

पंचक त्याज्य है।

योग—विष्कंभ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिघ, वैधति योग त्याज्य है।

करण—बव, तैतिल, गर, वणिज, शकुनि, तथा किंस्तुघन।

लग्न—२, ३, ५, ९वाँ, लग्न (राशि लग्न)।

३, ६, ११वें पापग्रह हो।

तन्द्र त्रिकोण में सौम्य ग्रह हो।

दशम भाव में सबल ग्रह हो।

टिप्पणी

गृहनिर्माण के समय गृहपति की राशि से सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र बलवान् होने चाहिये, यदि—

सूर्य निर्बल हो तो—	स्वामीनाश
चंद्र " "	स्त्री नाश
गुरु " "	सुख नाश
शुक्र " "	द्रव्य नाश

विशेष—

यदि ब्राह्मण (गृहकर्ता) हो तो गुरु-शुक्र विशेष बलवान् हों।

"	क्षत्रिय "	"	सूर्य भौम " "
"	वैश्य "	"	चन्द्र बुध " "
"	शूद्र "	"	शनि " "

गुरु-शुक्रास्त, चैत्र, शुक्ल, देवशयन, आषाढ़, ज्येष्ठ, माघ मास, वृश्चिक कुम्भ लग्न, अग्निपंचक,[2] अग्निबाण, भू-शयन, भू-हास्य, भू-रजस्वला, भू-रुदन, शूल, गण्ड, व्याघात, व्यतिपात,

१. आदित्य भौम वर्ज्यास्तु सर्ववारांः शुभावहा।
प्रसादेऽप्येवमेवस्यात्कूपवापीषु चैव हि॥—मत्स्य पुराण

२. गत तिथि में लग्न मिलाकर ९ का भाग देने से शेष २ बचे तो अग्निपंचक (अग्निभयकारक) होता है।

वैधृति योग, पंचक आदि त्याज्य हैं।

स्वाती-अनुराधा-रेवती नक्षत्र में शनि हो या शनिवार हो, हस्त-पुष्य-रेवती में मंगल हो या मंगलवार हो तो नक्षत्र एवं वार दोनों ही त्याज्य हैं।

नींव खोदने की दिशा—

देवालय	१२,१,२	३,४,५	६,७,८	९,१०,११
गृहारंभ	५,६,७	८,९,१०	११,१२,१	२, ३, ४
जलाशय	११,११,१२	१,२,३	४,५,६	७, ८, ९
विवाह	२, ३, ४	५,६,७	८,९,१०	११,१२,१
दिशा	अग्निकोण	ईशानकोण	वायव्य	नैऋत्यकोण

गृहारंभ के विशेष योग

१. मीन का शुक्र लग्न में हो, या कर्क का गुरु चतुर्थ भाव में हो या, तुला का शनि एकादश भाव में हो तो वह घर प्रबल धनदायक होता है।

२. कर्क लग्न में चन्द्र गुरु केन्द्र में तथा अन्यग्रह स्व या उच्च हो तो ऐसे समय में बना मकान प्रारब्धियों को ही मिलता है।

३. शुक्र लग्न में, सूर्य ११वें, तथा बुध १०वें हो तो घर कल्याणकारी होता है।

राहुमुख

राहु मुख दिशा	आग्नेय	नैऋत्य	वायव्य	ईशान
सूर्य राशि	२, ३, ४	११,१२,१	८,९,१०	५,६,७
शुभ दिशा	नैऋत्य	वायव्य	ईशान	आग्नेय

राहुमुख से पृष्ठवर्ती दिशा में घर की नींव खोदनी प्रारम्भ करनी चाहिए।

सर्पमुख विचार

सर्पशिर दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
मास	भाद्रपद	फाल्गुन	जयेष्ठ	मार्गशीर्ष
	आश्विन	चैत	आषाढ़	पोष
	कार्तिक	वैशाख	श्रावण	माघ

नाग के शिर में भवननिर्माण स्वामी नाशक, पीठ की ओर पुत्र-स्त्रीमारक, पुच्छ की तरफ अर्थनाश तथा वक्षस्थल में क्षेम-

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५(शुक्ल)
सामान्यतः जिस देवता के लिए जो तिथि निर्धारित है, उस तिथि को उस देव की प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०, श०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, घ०, श०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ६, १२।
स्थिर लग्न विशेष शुभ है।

टिप्पणी

देवशयन, मलमास, गुरुशुक्रास्त, निर्बल चन्द्र वर्जित है।

शिववास

शिवलिंग-स्थापनः में उपर्युक्त मुहूर्त शुभ है पर शिववास व फल विचार कर लेना चाहिए—

तिथि को दुगुनी कर ५ जोड़ दें तथा ७ का भाग दें, शेष के अनुसार निम्न प्रकारेण शिववास समझें—[1]

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश	सुखलाभ
२	गौरी सह	संपत्तिलाभ
३	वृषभ पर	सिद्धिदायक
४	सभा में	संताप, पीड़ा
५	भोजन पर	दुःख
६	रमण में	कष्ट
०	श्मशान में	मृत्यु

वार के अनुसार देवस्थापन से निम्न फल होता है—

रविवार	देवता उग्र रहता है
सोमवार	क्षेमदायक
मंगलवार	अग्निदायक
बुधवार	वरदायक
गुरुवार	सुखदायक
शुक्रवार	आनंददायक
शनिवार	सामान्य

१. तिथिं च द्विगुणं कृत्वा बाणै संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववास समुद्दिशेत॥

उग्र एवं क्रूर देवता की स्थापना रविवार को ही करनी चाहिए।

१०६. वास्तु शान्ति-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार०—चं०, बु० गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, मू०, श्र०, घ०, रे०।

लग्न—कोई भी हो, पर लग्न से १, २, ४, ५, ७, ६, १०, ११वें भावों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें भावों में पापग्रह हों।

टिप्पणी

अग्निवास, चन्द्रबल, भद्रा विचार कर लेना चाहिए, पर 'हवन चक्र शोधन' आवश्यक नहीं है।[1]

गृह बन जाने पर उसमें रहने के पूर्व यज्ञादि धार्मिक कार्य हो 'वास्तु शांति' कहलाती है।

१०७ नूतन गृहप्रवेश

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, घ० रे०।

लग्न—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ राशि लग्न।

वर्जित—दग्धा, रिक्ता शून्य तिथियाँ, अमावस्या, द्वादशी व शुक्रवार योग, अष्टम लग्न, भद्रा, चर लग्न, धनु, कुम्भ व मीन संक्रान्तियाँ।

१. विवाह यात्रा व्रत वास्तु यज्ञ चौलोपवीत ग्रहणे युगादौ।
तथा च दुर्गार्चन संविधाने न वह्नि चक्रं परिचिन्तनीयः॥

वामार्क विचार

गृहप्रवेश में वामार्क विचार परमावश्यक है।

द्वार दिशा—पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
सूर्याधिष्ठित भाव			
८,९,१०,११,१२	२,३,४,५,६	११,१२,१,२,३	५,६,७,८,९

उदाहरणार्थ यदि पश्चिम दिशा में मुख्य द्वार हो तो नूतन गृहप्रवेश-समय में लग्न ऐसा लेना चाहिए जब कि सूर्य २, ३,४,५, या ६ठें भाव में स्थित हो।

दिशा तिथि विचार

यदि मुख्य द्वार पूर्व में हो तो ५, १०, १५ तिथियाँ श्रेष्ठतम होती हैं।

यदि मुख्य द्वार पश्चिम में हो तो २, ७, १२, तिथियाँ श्रेष्ठ हैं

" उत्तर " ३, ८, १३ "

" दक्षिण " १, ६, ११ "

भद्रा विचार

गृहप्रवेश मुख्यद्वार से करना चाहिए, उस समय भद्रा सम्मुख या वामस्थ नहीं होनी चाहिए।

टिप्पणी

नूतन गृहप्रवेश मंगलाचरण के साथ वाद्यध्वनि करते हुए करना चाहिए, तथा सर्वप्रथम कुलदेव-पूजा एवं अग्रेजों का सम्मान करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को प्रसन्न करना चाहिए। धार्मिक कार्यसम्पन्न भी जरूरी है।

१०८. यात्रा-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, गु० शु०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पुन०, पु० ह०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—५, ६, ७, ८, १०, ११, १२।

टिप्पणी

पंचक में यात्रा वर्जित है।

मास शूल विचार

सूर्य राशि	मास शूल दिशा
२, ३, ४	पूर्व
५, ६, ७	दक्षिण
८, ९, १०	पश्चिम
११, १२, १	उत्तर

जिस दिशा में मास-शूल हो, उस दिशा में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

घात मास-तिथि

राशि	घात मास	घात तिथि
मेष	कातिक	१, ६, ११
वृष	मार्गशीर्ष	५, १० १५
मिथुन	आषाढ़	२, ७, १२
कर्क	पौष	२, ७, १२
सिंह	ज्येष्ठ	३, ८, १३
कन्या	भाद्रपद	५, १०, १५
तुला	माघ	४, ९, १४
वृश्चिक	आश्विन	१, ६, ११
धनु	श्रावण	३, ८, १३
मकर	वैशाख	४, ९, १४
कुंभ	चैत्र	३, ८, १३
मीन	फाल्गुन	५, १०, १५

घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञ रन्यकर्मसु शोभनम ॥

योगिनी

तिथि	दिशा
१, ९	पूर्व
२, १०	उत्तर
३, ११	आग्नेय
४, १२	नैऋत्य

५, १३	दक्षिण
६, १४	पश्चिम
७, १५	वायव्य
८, ३०	ईशान

यात्रा में योगिनी वामभाग या पृष्ठभाग में होनी चाहिए; आवश्यकता पड़ने पर तिथि की ६ घटी छोड़कर यात्रा करने से योगिनी-दोष नहीं रहता।

वार दिक्शूल

वार	दिशा
च० श०	पूर्व
चं० गु०	अग्नि
गु०	दक्षिण
सू० श०	नैऋत्य
सू० शु०	पश्चिम
मं०	वायव्य
मं० बु०	उत्तर
बु० श०	ईशान

दिक्शूल बायें तथा पीठ में शुभ होता है।

वार-दोषनिवारण

सूर्य	घी
चन्द्र	दूध
मंगल	गुड़
बुध	तिल
गुरु	दही
शुक्र	यव
शनि	उरद

वारदोष होने पर संबंधित वस्तु या वस्तुओं से बने पदार्थ को खाकर यात्रा करना शुभ होता है।

समय-शूल

प्रातः	पूर्व
मध्यान्ह	दक्षिण
गोधूलि	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

उपरिलिखित समय में संबंधित दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

काल राहु

वार	दिशा
सूर्य	उत्तर
चंद्र	वायव्य
मंगल	पश्चिम
बुध	नैऋत्य
गुरु	दक्षिण
शुक्र	अग्नि
शनि	पूर्व

ईशान कोण में काल राहु नहीं जाता। काल राहु दाहिने शुभ, अन्यत्र अशुभ होता है।

चन्द्रवास

राशि चन्द्र	दिशा
१, ५, ९	पूर्व
२, ६, १०	दक्षिण
३, ७, ११	पश्चिम
४, ८, १२	उत्तर

सम्मुख एवं दाहिने चन्द्र शुभ होता है, अन्य दिशा की ओर चन्द्र हो तो यात्रा का त्याग करना चाहिए।

तिथि-दोष-परिहार

तिथि	भक्ष्य
१	पुष्प
२	चावल

३	घृत
४	दही
५	अन्न
६	स्वर्णजल
७	गुड़
८	नींबू
९	जल
१०	गोमूत्र
११	यव
१२	खीर
१३	गुड़
१४	केसर
१५	मूंग
३०	त्याज्य

वारानुसार ग्राह्य शुभ समय

रवि	सूर्योदय काल
मंगल	भोजन काल के बाद
शनि	उषाकाल
अन्य वार	किसी भी समय

तारा विचार

जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग दें, शेष १ बचे तो जन्म, २ संपत्ति, ३ विपत्ति, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमित्र होता है।

१, ३, ५, ७वीं तारा अशुभ तथा त्याज्य है।

घात नक्षत्र

राशि	नक्षत्र
मेष	मघा
वृष	हस्त
मिथुन	स्वाती
कर्क	अनुराधा
सिंह	मूल
कन्या	श्रवण
तुला	शतभिषा
वृश्चिक	रेवती
धनु	भरणी
मकर	रोहिणी
कुंभ	आर्द्रा
मीन	आश्लेषा

घात नक्षत्रों में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

विशेष

(१) मृगशिरा, पुष्य, हस्त तथा श्रवण, इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ है, फिर चाहे अन्य सभी व्यवस्थाएँ अशुभ हों, फिर भी उनका दोष नहीं रहता।

(२) जब मनोबल प्रबल हो, तब यात्रा प्रारम्भ कर देनी चाहिए, फिर तिथि-वार-नक्षत्र किसी का दोष नहीं रहता।[1]

(३) उचित यात्रामुहूर्त में प्रस्थान असम्भव हो तो "प्रस्थान" कर देना चाहिए।[1]

प्रस्थान में ब्राह्मणों को यज्ञोपवीत, क्षत्रियों को शस्त्र, वैश्य को शहद तथा शूद्रों को आँवला या नारियल रखना चाहिए।[2]

स्वगृह से निकट यात्रा-दिशा में किसी संबंधी के घर प्रस्थान-सामग्री मुहूर्त-समय में रख दे, फिर यात्रा करते समय घर से निकल वह सामग्री ले आगे चला जाय, पुनः घर न लौटे। प्रस्थान ३ दिन के बाद निष्फल हो जाता है।

---

१. शुभं वाप्यशुभं वापि तिथि योगादिकं त्यजत्।
लब्ध्वा मनोबलं तत्र प्रयाणं शुभदं स्मृतम्॥

१. सुमुहूर्ते स्वयं गमनासम्भवे प्रस्थानं कार्यम्।

२. प्रस्थाने ब्राह्मणादीनां यज्ञसूत्रमथायुधम्।
माध्वा मल फलं प्रशस्त वृद्धिकारणम्॥

लग्न-समय

राशि	घटी पल
मेष	३—४५
वृष	४—१६
मिथुन	५—५
कर्क	५—४१
सिंह	५—४२
कन्या	५—३१
तुला	५—३१
वृश्चिक	५—४२
धनु	५—४१
मकर	५—५
कुम्भ	४—१६
मीन	३—४५

१९०. होमाहुति मुहूर्त

टिप्पणी

सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो, उससे चन्द्र नक्षत्र तक गिनें, तथा तीन-तीन नक्षत्रों का एक त्रिक बना लें, उसमें—

पहला त्रिक्	—	सूर्य का
दूसरा ,,	—	बुध का
तीसरा ,,	—	शुक्र का
चौथा ,,	—	शनि का
पाँचवाँ ,,	—	चन्द्र का
छठा ,,	—	मंगल का
सातवाँ ,,	—	गुरु का
आठवाँ ,,	—	राहु का
नवाँ ,,	—	केतु का

होम के दिन का नक्षत्र (या चन्द्र नक्षत्र) जिस त्रिक् में पड़ेगा, उसी ग्रह के मुख में होमाहुति पड़ती है।

खल या दुष्टग्रह के मुख में होमाहुति शुभ नहीं होती।

११०. मूल-निवास

आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ में मूल का निवास स्वर्ग में होता है, श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष में भूमि पर, फाल्गुन, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष और वैशाख में मूल पाताल लोक में रहता है।

१११. संक्रान्ति नाम

धनु, मिथुन, कन्या तथा मीन की संक्रान्ति का नाम "षड्-शीति मुखा" है, तुला, मेष की संक्रान्ति का नाम 'विषुव' है, तथा सिंह, वृश्चिक, वृष और कुम्भ संक्रान्ति का नाम 'विष्णु-पदा' है।

११२. मूलाश्लेषा जन्मफल

मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

,,	द्वितीय	,,	,,	माता	,,
,,	तृतीय	,,	,,	धन	,,
,,	चतुर्थ	,,	,,	समस्त सुख प्राप्त होता है।	

आश्लेषा के पहले चरण में जन्म हो तो सुखदायक।

,,	दूसरे	,,	,,	धननाश।
,,	तीसरे	,,	,,	माता का नाश।

आश्लेषा के चौथे चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

मूल आश्लेषा की शान्ति करने से उपर्युक्त दोष-निवृत्ति हो जाती है।

११३. ग्रह-कार्यबल

किस कार्य में किस ग्रह का बल विशेष देखना चाहिए—

सूर्य	राज्य कार्य
चन्द्र	समस्त शुभ कार्य
मंगल	संग्राम, मुकदमा
बुध	विद्याभ्यास, परीक्षा
गुरु	विवाह-उत्सव
शुक्र	यात्रा
शनि	लौह कार्य, दीक्षा

राहु पापकर्म
केतु क्रूर कर्म

११४. रामायण भागवत् पुराण कथारंभ मुहूर्त

टिप्पणी

गुरु के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें—
१ से १६ नक्षत्र तक अर्थला
१७ से २४ ,, तक मृत्यु
२५ से २७ ,, तक मोक्षप्रद

पक्ष—शुक्ल पक्ष ।
वार—चन्द्र, बुद्ध, गुरु ।
तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (शुक्ल पक्ष) १ (कृष्ण पक्ष) ।
भद्रा, व्यतिपात कुयोग वर्जित है ।

११५. मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

तिथि—१, ७, ८, के अतिरिक्त सभी तिथियाँ ।
वार—गु०, शु०, श०, सूर्य ।
नक्षत्र—अश्वि०, ह०, चि०, अनु०, पु०, धनि० ज्ये० पुन० रे०।
लग्न—स्थिर लग्न ।

११६. लग्न कर्त्तव्य

नीचे विभिन्न लग्नों से संबन्धित शुभ करणीय कार्य दिये जा रहे हैं ।

मेष

राज्यतिलक, यात्रा, समझौता, नवीन वस्त्र पहनना, आभूषण धारण, जमीन खोदना, क्रूर पाप एवं साहसिक कार्य ।

वृष

कृषि-कार्य, कुआँ जलाशय आदि का निर्माण, विवाह-कार्य, मांगलिक कृत्य, गृहारंभ, स्थिर कार्य, गृहप्रवेश, दुकान प्रारम्भ करना, पशु खरीदना, बेचना या दान देना आदि ।

मिथुन

कामकला, विज्ञानकार्य, युद्ध, शिल्प, शुभकार्य, राज्याभिषेक ।

कर्क

जलाशय-निर्माण व प्रतिष्ठा, कूप, बावड़ी, सरोवर आदि से सम्बन्धित कार्य, शांतिकार्य, चित्रकारी, लेखनकार्य ।

सिंह

रस, गन्ना ईख आदि से सम्बन्धित कार्य, वस्तु-क्रय-विक्रय, हाट लगाना, दुकान करना, राज्य सेवा, नौकरी करना, आभूषण बनाना तथा समस्त शुभ कार्य ।

कन्या

विद्यारंभ, गहने पहनना, चर कार्य, स्थिर कार्य, दवाई बनाना, शिक्षा, विवाहादि समस्त मांगलिक कार्य ।

तुला

कृषि कार्य, यात्रा, व्यापार, विवाह, यज्ञोपवीत, पशुपालन तथा पीतल की धातु से सम्बन्धित कार्य ।

वृश्चिक

राज्याभिषेक, शुभ कार्य, स्थिर कार्य, नौकरी ड्यूटी जॉइन करना, गोपनीय कार्य, विषादि से सम्बन्धित कार्यादि ।

धनु

विवाह-यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य, पशुपालन, पशु-क्रय-विक्रय, चर कार्य ।

मकर

कृषिकार्य, पशु क्रय-विक्रय, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण, बारूद से सम्बन्धित कार्य, जलयान, तालाब-कूपादि खनन, आवागमन ।

कुम्भ

कृषि, व्यापार, नौकानयन, जलयात्रा, व्यापार, भूमि-सम्बन्धित कार्य, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण ।

मीन

यज्ञोपवीत, विवाहादि, राजतिलक, वस्त्र-अलंकार बनाना-

पहनना आदि शुभ कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ ।

११७. सूर्य विचार

सूर्य—यह ग्रहराज है। गोचर में यह राशि आने से छः दिन पूर्व ही फल देने लग जाता है। सूर्याधिष्ठित राशि से छठे स्थान पर कोई ग्रह हो तो सूर्य विद्ध होता है, फलतः निष्प्रभाव हो जाता है। सूर्य-बल में यह विचार रखना आवश्यक है।

पर शनिश्चर सूर्य का ही पुत्र है। अतः शनि-सूर्य में परस्पर वेध नहीं होता।

दोष-परिहार

सूर्य-दोष हो तो 'आदित्य हृदयस्तोत्र' पढ़ें व सूर्यार्घ्य दें।

दान, रक्त वस्त्र, लाल कमल, गेहूँ, गुड़।

जपसंख्या—७००० ।

मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॥

रत्न—माणिक्य रत्न, सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

११८. चन्द्र विचार

चन्द्रमा स्त्रीग्रह तथा मार्गी है। पूर्ण चन्द्र सौम्य तथा क्षीण चन्द्र पापग्रह माना जाता है। चन्द्रमा के शुभ व विद्धस्थान निम्न है—

शुभ स्थान	विद्ध स्थान
१	५
३	९
६	१२
७	२
१०	४
११	८

बुद्ध, चन्द्रमा का पुत्र है। अतः बुध का वेध चन्द्रमा को नहीं होता। किसी भी मुहूर्त में चन्द्रबल का विचार सर्व-प्रमुख है, क्योंकि मुहूर्त में तिथि को १ गुण, नक्षत्र को ४, वार को ८, करण को १६, योग को ३२, तारा को ६० तथा चन्द्र

१०० गुण प्रदान किये गये हैं—[1]

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा विशेष बली होता है। शुभ चन्द्रमा भी यदि पापग्रह के साथ हो, या दो पापग्रहों के बीच में स्थित हो, या सप्तम भाव में हो तो अशुभ एवं दुष्प्रभावकारक ही होता है।

गर्भाधान, राज्याभिषेक, जन्मकाल, विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा, राजयुद्ध, दान, व्रत, उपवास, कामक्रीड़ा एवं सीमन्तोन्नयन में द्वादश चन्द्र शुभ है।[2]

विवाह, रजोदर्शन गर्भाधान तथा प्रसव पूर्व स्थिति आदि संस्कारों में स्त्री की राशि से चन्द्र विचार करना चाहिए। अन्य सभा कार्यों में पति की राशि से ही चन्द्र की शुभाशुभता का विचार श्रेयस्कर एवं शास्त्रसम्मत है।[3]

चंद्र निर्बल-विचार

दान—मोती, दही, श्वेत चंदन आदि का दान करना चाहिए।

जपमंत्र—ओं श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ॥

जपसंख्या—११००० ।

रत्न—मोती चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर पहने।

---

१. तिथिरेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ।
चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तस्तस्माश्चन्द्रबलं स्मृतम् ।
द्वात्रिंशद् गुणितो योगस्तारा षष्टिगुणान्विता ॥
—फ० म० संग्रह

२. गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने ।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥
—दैवज्ञ कल्पद्रुम

३. विवाहकार्ये कुसुमः प्रतिष्ठा गर्भप्रतिष्ठा वनिताविशुद्धौ ।
अन्यानि कार्याणि ध्रुवस्य सिद्धौ पत्यो विहीने प्रमदासु शुद्धा ।
—राज मार्तण्ड

११९. भौम-विचार

यह लालवर्ण का उग्र ग्रह है, तथा-समय-समय पर यह अस्तमार्गी वक्री आदि होता रहता है। यह गोचर में राशि के प्रारम्भ में ही फल दे देता है।

शुभस्थान	मंगलविद्ध स्थान
३	१२
६	९
११	५

दोष-परिहार—

दान—रक्त वस्त्र, गुड़, ताम्र-घी आदि का।

मंत्र—ओं क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

रत्न—मूंगा रत्न सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

१२०. बुध-विचार

यह नपुंसक ग्रह, चन्द्रमा का पुत्र तथा सौम्यग्रह है। यह जिस ग्रह के साथ या जिस राशि में बैठता है, उस राशि-स्वामी के अनुसार ही अपना फल दे देता है।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विशुद्धस्थान
२	५
४	३
६	९
८	१
१०	८
११	१२

दोष-परिहार

दान—स्वर्ण, शक्कर, शहद, नीलवस्त्र, कपूर आदि।

जपसंख्या—१७००० जप।

जपमन्त्र—ओ३म् ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

रत्न—पन्ना स्वर्ण-मुद्रिका में जड़वाकर पहनें।

१२१. गुरु-विचार

देवाचार्य कभी अस्त, वक्री, मार्गी होते रहते हैं, पर

अतिचार गत, वृद्धायु, वक्री, एवं अस्तावस्था में शुभफलद नहीं रहते। गोचर में यह राशि के मध्य में फल देते हैं।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विद्धस्थान
२	१२
५	४
७	३
९	१०
११	८

दान—पीत वस्त्र, हल्दी, खांड, पुखराज।

जपमन्त्र—ओ३म् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः॥

जपसंख्या—१६०००।

रत्न—पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

१२२. शुक्र विचार

यह स्त्रीग्रह, भोग का प्रतीक, अस्तमार्गी तथा वक्री होता रहता है।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विद्धस्थान
१	८
२	७
३	१
४	१२
५	९
८	५
९	१[illegible]
११	३
१२	६

दान—गौ, घी, श्वेत वस्त्र, चावल दही आदि।

जपमन्त्र—ओ३म द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जपसंख्या—२००००।

रत्न—हीरा।
धातु—स्वर्ण।

सोने की अंगूठी में हीरा जड़वाकर धारण करना शुभ एवं लाभदायक रहता है।

१२३. शनि विचार

यह नपुंसक ग्रह सूर्य का पुत्र, कृष्ण वर्ण तथा गोचर में राशि के अन्त में फल देनेवाला ग्रह है।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विद्धस्थान
३	१२
६	९
११	५

सूर्य-शनि का परस्पर वेध नहीं होता।

वृहद् पनौती

कुछ इसे 'वृहद् कल्याणी' या 'बड़ी पनौती' भी कहते हैं। चूंकि यह एक राशि पर ढाई बरस रहता है, अतः जन्मचन्द्र-राशि से जब शनि १२, १ और दूसरी राशि पर होता है, तब इन तीनों राशियों पर अर्थात् साढ़े सात बरस तक के काल को वृहद् पनौती कहते हैं।

यह समय अपव्यय, परेशानियों एवं कठिनाइयों का होता है।

बारहवीं राशि पर शनि होने पर उसका प्रभाव हृदय पर, जन्म का शनि सिर पर तथा दूसरा शनि पैरों पर अपना प्रभाव रखता है। सिर पर शनि दुर्बलता, हृदय पर बाधाएँ, तथा पैरों पर शनि होने से व्यर्थ का भ्रमण कराता है।

लघु पनौती

जब शनि जन्मराशि से चौथे या आठवें में होता है, तो उस ढाई बरस की अवधि को लघु पनौती कहा जाता है।

लघु पनौती में हानि, मरण, व्याधि, विदेश-प्रवास, बन्धु-विरोध, क्लेश तथा चिन्ता होती है।

शनि, चरण

जन्मराशि से शनि जिस-जिस भाव में हो, उसके अनुसार फल—

जन्मराशि से शनिस्थान	पाद	फल
१, ६, ११	स्वर्ण	सर्वसुख
२, ५, ९	रजत	सौभाग्य
३, ७, १०	ताम्र	मध्यम, धननाश।
४, ८, १२	लौह	शुभ

शनिवाहन

अपने जन्म नक्षत्र से शनि नक्षत्र तक गणना कर प्राप्तांक में ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसके अनुसार—

शेष	वाहन	फल
०	हंस	मृत्यु
१	गर्दभ	हानि
२	अश्व	विजय
३	गज	सुख
४	महिष	सामान्य
५	सियार	शोक
६	सिंह	शत्रुनाश
७	काक	कलह
८	मयूर	लाभ

दोष परिहार

दान—नीलम, उड़द, तिल, तेल, चर्मपादुका, कृष्ण वस्त्र।
मन्त्र—ओ३म् प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।
रत्न—नीलम।
जपसंख्या—१९०००।
धातु—लौह।

लोहे या पंचधातु की अंगूठी में नीलम जड़वाकर धारण करना चाहिए।

१२४. राहु केतु विचार

ये पापगृह हैं, तथा राशि पर आने से चार मास पूर्व ही अपना फल देने लग जाते हैं।

विद्ध स्थान

शुभस्थान	विद्ध स्थान
३	१२
६	९
११	५

दोष परिहार

दान—गोमेद, सीसा, लहसुनिया (केतु के लिए), नील वस्त्र, कम्बल।

जप—राहु—१८००० ।

केतु—७००० ।

मंत्र—राहु—ओ३म् भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

केतु—ओ३म् स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

रत्न—राहु—गोमेद।

केतु—लहसुनिया :

धातु—लौह या पंचधातु में रत्न जड़वाकर पहनें

१२५. सर्वोपयोगी मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३,५, ८,६,१०,१२,१३,१३, १५ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, आश्ले०, उत्तरा ३, अनु०, श्र०, ध०, शत०, रे०।

टिप्पणी

प्रत्येक प्रकार के शुभ एवं मंगलमय कार्यों के लिए उपर्युक्त मुहूर्त श्रेष्ठ हैं।

१२६. रोग-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—अ०, रो० मृग०, पुन०, पु०, पूर्वा० ३, अनु०

श्र०, रे०।

टिप्पणी

उपर्युक्त योग में यदि कोई व्यक्ति बीमार हो तो समय पर अल्प चिकित्सा से ही व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है।

रोग त्रिनाड़ी

प्रथम नाड़ी	द्वितीय नाड़ी	तृतीय नाड़ी
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू० फा०	मघा	आश्लेषा
उ० फा०	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू० षा०
धनिष्ठा	श्रवण	उ० षा०
शतभिषा	पू० भा०	उ० भा०
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृग

रोगी का जब जन्मनक्षत्र, चन्द्रनक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र तीनों ही एक नाड़ी पर हो जायें, तो रोगी की तत्काल मृत्यु समझ लेनी चाहिए।

१२७. सर्पकष्ट मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, ११, १३ (शु)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०,पु०, पूर्वा० ३, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श्र०, ध०, रे०।

उपर्युक्त मुहूर्त में यदि किसी को सर्प काटे तो वह अवश्य ही बच जाता है।

१२८. रोगशान्ति उपचार

विभिन्न नक्षत्रों में जिस नक्षत्र को व्यक्ति बीमार पड़े तो उससे संबन्धित पशु की आकृति गेहूँ के आटे से बनाकर संबंधित चीज उसके मुंह मे देकर दक्षिण दिशा की ओर सुनसान स्थान पर फेंक दें तो तुरन्त रोग शान्त हो जाता है—

नक्षत्र	आकृति	मुख में भरने की वस्तु
१ अश्विनी	वानर	गड़ भात
२ भरणी	वानर	गुड़ भात
३ कृत्तिका	बकरी	दही
४ रोहिणी	गाय	शाक
५ मृगशिरा	मृग	उड़द
६ आर्द्रा	गाय	तृण
७ पुनर्वसु	सूअर	शाक
८ पुष्य	बकरी	खीर
९ आश्लेषा	सूअर	घृत
१० मघा	वानर	तिल
११ पूर्वा फाल्गुनी	वानर	मूंग
१२ उत्तरा फाल्गुनी	बैल	शाक
१३ हस्त	भैंसा	कमल
१४ चित्रा	शेर	पुष्प
१५ स्वाती	लोमड़ी	तिल
१६ विशाखा	बाघ	गुड़
१७ अनुराधा	मृग	मेथी
१८ ज्येष्ठा	चूहा	धनिया
१९ मूल	बिल्ली	तिल
२० पूर्वाषाढ़ा	मगरमच्छ	तिल
२१ उत्तराषाढ़	बल	शाक
२२ श्रवण	भैंसा	पीपर
२३ धनिष्ठा	घोड़ा	पीपर
२४ शतभिषा	वानर	चावल
२५ पूर्वा भाद्रपद	कूकर	दही
२६ उत्तरा भाद्रपद	कूकर	दही
२७ रेवती	वानर	गुड़भात

१२९. औषधि-सेवन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १२, (शुक्ल), १ (कृ)

वार— सू०, चं० बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, मृग०,पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, श्र० ध०, रे ।

लग्न—३, ४, ५, ६, ११, राशि ।

टिप्पणी

जन्म नक्षत्र एवं जन्मलग्न त्याज्य है ।

१३०. शल्य क्रिया मुहूर्त

तिथि—४, ९, १४ (दोनों पक्ष) । शुभ शुक्ल पक्ष विशेषतः ।

वार—सूर्य, मंगल, गुरु ।

नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, पुष्य, ह०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श्र०, ध० ।

जन्म नक्षत्र वर्जित ।

टिप्पणी

दशा एव गोचर अवश्य देख लेना चाहिए ।

१३१. आरोग्यस्नान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १३, १५ (शुक्लपक्ष) ।

वार—सू०, चं०, बु० गु०, श० ।

नक्षत्र—अ०, रो० मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु० श्र०, ध०, रे०, ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९ राशि ।

टिप्पणी

रोगी का चन्द्रबल एवं सूर्यबल अवलोकनीय है ।

१३२. शान्ति-कार्य मुहूर्त

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, (शुक्ल ११ से पूर्व), कार्तिक माघ ।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल पक्ष) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि० स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ९, १२ राशि।

टिप्पणी

गुरुशुक्रास्त, भद्रा; व्यातपात, निर्बल चन्द्र आदि त्याज्य है।

१३३. अनुष्ठान मुहूर्त

तिथि--२, ३, ५, ७, १०, ११, १२,१३, १४ (शुक्ल)।
वार—सू०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, स्वा०, चि०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

विशेष

गुरुशुक्रास्त, देवशयन, क्षीण चन्द्र वर्जित है।

१३४. पूर्णाहुति मुहूर्त

तिथि—५, १०, १५ (पूर्णातिथि) शुक्ल पक्ष।
वार—चं० बु०, गु०, शु०।
कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्यवार भी लिया जा सकता है।
नक्षत्र---अश्वि० रो०, मृ०, आ०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, रे०।
लग्न---२, ३, ६, ९, १२ राशि लग्न।

टिप्पणी

केन्द्रत्रिकोण में शुभग्रह हो, तथा चन्द्रमा शुभ एवं बली हो।

१३५. अखिल धार्मिक कार्य मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ १५ (शु०)।
वार---सू०, च०, बु०, गु० शु०।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, ध०, रे०।
लग्न—२, १०, ११, १२।

ऊपर विविध मुहूर्त दिखाने के पश्चात् संक्षेप में स्वप्न एवं शकुन पर प्रकाश डाला जा रहा है। यात्रादि में इनका विशेष महत्त्व है।

स्वप्न

भविष्यगर्भा घटनाओं का ज्ञान स्वप्न के माध्यम से संभव है। विश्व-इतिहास में ऐसी सैकड़ों घटनाएँ हैं, जिनके स्वप्न के माध्यम से गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं।

यहाँ केवल ज्योतिष एवं यात्रा से संबंधित स्वप्नों के बारे में जानकारी दी जा रही है।

यात्रा से पूर्व निर्दिष्ट एवं विचारणीय कार्य की शुभाशुभता की जानकारी के लिए एक दिन पूर्व स्वस्थचित्त, संतुलित एवं सात्विक भोजन कर सुखद शय्या पर गहरी नींद सोये।

फल

यदि रात्रि के प्रथम पहर में स्वप्न आवे तो उसका फल एक वर्ष २ मास पश्चात्, दूसरे पहर में स्वप्न का फल छः महीनों बाद, तीसरे प्रहर में दृष्ट स्वप्न का फल ३ महीने १२ दिन बाद, तथा अंतिम पहर में जो स्वप्न देखा जाता है, उसका फल तुरन्त मिलता है।

शुभ स्वप्न

गौ	देवता	हाथी
सफेद वस्तुएँ	स्त्री	राजा
गुरु	स्वर्ण	दही
मिष्टान्न	ध्वजा	दर्पण
विवाह	धनलाभ	जलाशय
शिवलिंग	पिता	कुटुम्ब का सदस्य
बालक	महल	सिंह
फलदार वृक्ष	सिंहासन	सूर्य-चन्द्रादि
नग्न शस्त्र	गन्धर्व	जलपान
गंगा नदी	छत्र	युद्ध-विजय
पूजन	पृथिवी	पर्वत
सर्प	रुदन	मृत्यु
यज्ञ	देवी कार्य	भीड़
वाहन	किला	नाव

सफल यात्रा	अद्भुत वस्तुएँ	विद्याध्ययन
महात्मा	सभ्य व्यक्ति	शुभ वस्तुएँ

उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ स्वप्न में दिखाई दें तो कार्य सिद्धि समझनी चाहिए।

अशुभ स्वप्न

हड्डियाँ	राक्षस	रक्त
जलता हुआ मुर्दा	रुई	राख
सूखा पेड़	घी, तेल	गधा
जंगली जानवर	सर्प	कीचड़
स्याही	केश पतन	खाली बर्तन
रिक्त जलाशय	अपमान	पागल
काले-लाल वस्त्र	गुड़ खाना	विष्ठा-मूत्र
पहाड़ से गिरना	क्रोधित व्यक्ति	रोगी
पितृ	रसोईघर	आँधी
नंगा पुरुष या स्त्री	महिष	दक्षिण-यात्रा
प्रसन्नता	हँसना	गायन-कीर्तन
तारे टूटना	मक्खी, मच्छर	मुर्गा
बिच्छू	चोरी	मुण्डन
रोग	कबूतर	रीछ
उल्लू	कौआ	भूत-प्रेत
धातुएँ	सुनार	लुहार
देवालय पतन	झगड़ा	होहल्ला

उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ दिखाई दें तो कार्य-असिद्धि समझनी चाहिए।

अशुभ स्वप्न परिहार

अशुभ स्वप्न आने पर पुनः सो जाना चाहिए, चाहे सूर्योदय हो गया हो।

पर शुभ स्वप्न आ जाने पर तुरन्त उठ जाना चाहिए, और उसके बाद सोना नहीं चाहिए।

अशुभ स्वप्न ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को सुनाना चाहिए,

जिससे उसका दुष्प्रभाव कम हो जाय। अशुभ स्वप्न आने पर प्रातः उठकर गंगास्नान, देवपूजा एवं दान करना चाहिए।

शकुन

यात्रा, विवाह, यज्ञोपवीत आदि सभी शुभ कार्यों से पहले शकुन देख लेना आवश्यक है। शुभ शकुन कार्य सिद्ध करते हैं जबकि अशुभ शकुन कार्य विलम्ब, कार्य बाधा या कार्यनष्ट करते हैं। नीचे शुभ-अशुभ शकुनों को स्पष्ट किया जा रहा है—

शुभ शकुन

सौभाग्यचिह्नयुत पुत्रवती स्त्री	वेश्या	सभ्य व्यक्ति
कुमारी	बालक	बनिया
यशस्वी पुरुष	आत्मीय जन	ब्राह्मण
ज्योतिषी	विद्वान्	धोबी
सुन्दर स्त्री	पगड़ीधारी व्यक्ति	राजा
शिक्षक	घोड़ा	ताँगा
गाय	मोर	बैल
भेड़	हिरण	कबूतर
बकरा	सांप	अन्न
फलों का ठेला	ईख	पुष्प
ताम्बूल	गीली लकड़ी	दर्पण
वस्त्र	दूध-दही	मांस
शराब	घी	ध्वजा
रिक्शा	खाद्य	दीपक
नगाड़ा	वाद्य	जलयुक्त कलश
छाता	मिट्टी	अग्नि
शवयात्रा	देव-प्रतिमा	शुभ वचन
गोबर	शुभ समाचार	जयघोष
वेद-ध्वनि	पुस्तकें	पूजन-सामग्री
खिलाने	आनन्ददायक सामग्री	इत्र

शुभ शकुनों को अपने से दाहिने रखकर यात्रादि मंगल

जानिए अग्निवास

किस तिथि को अग्निवास कहाँ रहता है ?

अग्निवास यज्ञादि के लिए पृथ्वी में शुभ होता है । आकाश में प्राणनाशक, पाताल में धनैश्वर्य की हानि करता है ।

आकाश	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	1	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	2	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	3	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	4	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	5	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	6	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	7	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	8	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	9	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	10	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	11	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	12	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	13	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	14	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	15	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कृष्ण पक्ष	1	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	2	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	3	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	4	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	5	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	6	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	7	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	14	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	15	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

' संध्या के समय जप-तप व ध्यान के सिवाय कुछ न करें '

कार्य करने चाहिए

अपशकुन

चोर	नंगा	पागल
नकटा	संन्यासी	ब्रह्मचारी
रोगी	लंगड़ा	नपुंसक
अन्धा	दरिद्री	जटाधारी
कोढ़ी	गधा	ऊँट
भैंसा	पतन	यवन
रजस्वला	गर्भवती	विधवा
शत्रु	भ्रष्ट	विकलांग
भिखारी	लकड़हारा	पाखंडी
नाई	सुनार	लुहार
चमार	कुम्हार	मोची
दुर्जन	शिकारी	तलवार
हथकड़ी	शरीर धूजना	ठोकर खाना
दुर्घटना	नंगे सिरवाला व्यक्ति	लकड़ियाँ
बिल्ली	श्वान	बाँझ गाय
कृष्ण सर्प	कौआ	वानर
कुत्ते का कान फड़फड़ाना	श्वान युद्ध	बिल्ली का रास्ता काटना
काला धान	लकड़ियाँ	आटा
घास	झाड़ियाँ	तेल
छाछ	नमक	गुड़-खाण्ड
झाड़ू	चावल	खाली बरतन
बरतन गिरना	पत्थर	लोहा
हड्डियाँ	रस्सी	जंजीर
खाली कलश	छींक	'ठहरो' की ध्वनि
कलह	क्रोध	कुत्सित वाक्य
रुदन	कूड़ा-करकट	दुर्घटना

यात्रा, विवाह आदि शुभ कार्यों में अशुभ शकुनों का

त्याग करना चाहिए। अशुभ शकुन होने पर दस मिनट विश्राम के बाद प्रस्थान करे।

यदि तीन बार (यात्रा में) अशुभ शकुन हो जाय, तो यात्रा स्थगित कर दी जानी चाहिए।

छींक

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य या यात्रा से पूर्व छींक हो जाय, तो वह मनोरथ-सिद्धि को नष्ट कर देती है, अतः छींक को अशुभ ही माना है।

जान-बूझकर की गई छींक, वृद्ध, बालक, वात-पित्त-कफ, रोगग्रस्त व्यक्ति के द्वारा की गई छींक को महत्त्व नहीं देना चाहिए।

अविवाहिता, गर्भिणी, वेश्या गायिका तथा निम्न जाति की स्त्री द्वारा की गई छींक पूर्ण अशुभ है तथा गाय द्वारा की गई छींक मरणप्रद है।

कुछ विद्वानों के अनुसार सामने की छींक कार्यनाश, दाईं तरफ की छींक अशुभ, पीठ-पीछे की छींक शुभफलद एवं बाईं ओर की छींक शुभ होती है।[1]

दिशानुसार छींक फल

दिशा	फल
पूर्व	लक्ष्मीप्राप्ति
पश्चिम	सुख
उत्तर	अशान्ति
दक्षिण	सिद्धिप्रद
अग्नि	निधन
ईशान	रक्षा
वायव्य	समस्त लाभ
नैऋत्य	पीड़ा

निरर्थकं पुरः प्रोक्तमनर्थं दक्षिणेन तु।
पृष्ठतः कार्यलाभाय क्षुतं क्षेमाय वामतः॥
—मुहूर्त दीपिका

अपवाद

दवा बनाने या लेने के समय, वाहन पर चढ़ते समय, विवाह, शयन, भोजन, विद्यारंभ तथा खेत में बीज बोने के समय यदि छींक हो तो वह शुभ है।[1]

छींक होने पर कर्ता रुककर आठ बार जमीन पर दाहिना पैर मारे, जूते खोलकर पुनः पहने तथा मुख से शुभवचन उच्चरित करे। विष्णु-स्मरण करे।

गधे का बाईं ओर या पीठ-पीछे रेंकना शुभफलदायक है।

अशुभ शकुन बाईं ओर तथा शुभ शकुन दाहिनी ओर हो तो लगभग सुखद कहे जाते हैं।

यदि यात्रा आवश्यक हो, या कार्य प्रारंभ करना आवश्यक हो तो अशुभ शकुन होने पर शिवार्चन करने से अशुभ शकुन दोष मिट जाता है।

स्वर-विज्ञान

यात्रा, विवाहादि शुभ कार्यों में स्वर का महत्त्व भी है। नाक द्वारा जो श्वास बाहिर आता है, उसे निःश्वास तथा बाहर से जो अन्दर जाता है, उसे श्वास कहते हैं।

वार के अनुसार स्वर-महत्ता इस प्रकार है—

वार	दिन	रात
रविवार	दाहिना	बायाँ
चन्द्रवार	बायाँ	दाहिना
मंगलवार	दाहिना	बायाँ
बुधवार	बायाँ	दाहिना
गुरुवार	दाहिना	बायाँ
शुक्रवार	बायाँ	दाहिना
शनिवार	बायाँ	दाहिना

उदाहरणार्थ यदि मंगलवार के दिन को कोई शुभ कार्य या यात्रा-प्रस्थान कर रहे हैं, तो उस समय दाहिना स्वर चलता हो तो शुभ है, पर मंगलवार को ही रात को किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ में बायें स्वर को महत्ता दी जानी चाहिए।

बायें नथुने से निकलनेवाले तीव्र श्वास को बायाँ स्वर तथा दाहिने नथुने से निकलनेवाले श्वास को दाहिना स्वर कहते हैं।

यदि दोनों स्वर बराबर चल रहे हों तो फल सामान्य समझना चाहिए।

जिस नथुने से अपेक्षाकृत तेज निःश्वास होता हो वही प्रमुख स्वर कहलाता है।

इस प्रकार ज्योतिष-प्रेमियों को धीरे-धीरे अध्ययन करने से स्वरशास्त्र भली प्रकार समझ में आ जायगा।

□□

जीवन के प्रत्येक क्षण का एक अदृश्य संचालक है जिसकी व्यवस्था से यह समयचक्र गतिशील रहता है। दिन, रात, रात के बाद फिर ठीक समय पर निश्चित स्थान पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त, ठीक समय पर ऋतुओं का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं वह एक अदृश्य विराट सत्ता की विशेष देन है। इन सबका हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

मुहूर्त ज्योतिष हमें इस बात का बोध करा देता है कि किस कार्य के लिये कौन-सा राह साधक या बाधक है।

सुप्रसिद्ध ज्योतिष-मर्मज्ञ
डॉ॰ नारायण दत्त श्रीमाली
की एक वैज्ञानिक पुस्तक

(सुबोध पब्लिकेशन)

---

१. औषधेऽध्ययने वादे वाहने शयनेऽशने।
बीजवापे बुधै प्रोक्तं शोभनं सप्तसु क्षुतम ॥
—मुहूर्त गणपति

नित्य हँसना सीखो, भंवरों से नित्य